हनुमान
जीवन
चरित्र

।। श्री मारुति नमः ।।

# हनुमान जीवन-चरित्र

हमारे पुरातन ग्रन्थ—बाल्मीकीय रामायण, रामचरित मानस, अध्यात्म रामायण, ब्रह्मांड पुराण, पद्म पुराण और महाभारत इत्यादि में हनुमान जी के बारे में अनेकों प्रसंग हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जो परम्परा से चली आ रही हैं। इन्हीं सब बातों को एक क्रम से लिखकर 'हनुमान जीवन चरित्र' आपके समक्ष है।

मूल्य : ६.००

प्रकाशक :

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

□
प्रकाशक—

**रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)**
१८२ श्रवण नाथ नगर हरिद्वार, (२४९४०१)

□
मुद्रक—

**शर्मा प्रिंटर्स,**
१३७, श्याम गली, मौजपुर दिल्ली-५३

□
मूल्य—
छ: रुपये ।

---

हनुमान जी के कई भक्तों के आग्रह पर ये पुस्तक छापी गई है। भक्तराज हनुमान उन पर कृपा दृष्टि करें, यहा हमारी मनोकामना है। जो भक्ति हनुमान भक्ति के प्रचार हेतु इस पुस्तक का अधिक संख्या में लेकर बाँटना चाहें उन्हें यह पुस्तक लागत मूल्य पर दी जाएगी। सम्पर्क करें।

—प्रकाशक

# अनुक्रमणिका

---

# हनुमान जीवन चरित्र

## हनुमान और शिव

भगवान शंकर भगवती सती के साथ कैलाश के एक उत्तम शिखर पर विराजमान थे। वृक्ष की घनी छाया में उनके शरीर पर भूरे रंग की जटाएं बिखरी हुई थीं। हाथ में रुद्राक्ष की माला, गले में सांप और सामने ही नंदी बैठा हुआ था। उनके अनुचर वहां से कुछ दूर, परस्पर अनेकों प्रकार की क्रीड़ाएं कर रहे थे। उनके सिर पर चन्द्रमा और गङ्गा की धारा रहने के कारण तीसरे नेत्र की विषम ज्वाला शान्त थी। ललाटका भस्म बड़ा ही सुहावना मालूम पड़ रहा था।

एकाएक 'राम-राम कहते हुए उन्होंने अपनी समाधि भंग की। सती ने देखा कि भगवान शंकर एक विचित्र भाव से उनकी ओर देख रहे हैं। वे उनके सामने खड़ी हो गयीं और हाथ जोड़कर कहने लगीं—'स्वामिन्! इस समय मैं आपकी क्या सेवा करूँ, क्या आप कुछ कहना चाहते हैं, भगवान शंकर ने कहा—'प्रिये! आज मेरे मन में एक शुभ संकल्प

उठ रहा है। मैं सोच रहा हूं कि जिनका मैं निरन्तर ध्यान किया करता हूँ, जिनके नामों को रट-रटकर गद्‌गद् होता रहता हूं, जिनके वास्तविक स्वरूप का स्परण करके मैं समाधिस्थ हो जाता हूं, वे ही मेरे भगवान् वे हो मेरे प्रभु अवतार ग्रहण करके संसार में आ रहे है। सभी देवता उनके साथ अवतार लेकर उनकी सेवा का सुयोग प्राप्त करना चाहते हैं, तब मैं ही क्यों वंचित रहूं? मैं भी वहीं चलूं और उनकी सेवा करके अपनी युग-युग की लालसा पूर्ण करूं, अपने जीवन को सफल बनाऊं।

भगवान शंकर की यह बात सुनकर सती सहसा यह न सोच सकीं कि इस समय क्या उचित है और क्या अनुचित। उनके मन में दो तरह के भाव उठ रहे थे। एक तो यह कि मेरे पतिदेव की अभिलाषा पूर्ण होनी चाहिये और दूसरा यह कि मुझसे उनका वियोग न हो। उन्होंने कुछ सोचकर कहा-'प्रभो! आपका संकल्प बड़ा ही सुन्दर है—जैसे मैं अपने इष्टदेव की—आपकी सेवा करना चाहती हूं, वैसे ही आप भी अपने इष्टदेव की सेवा करना चाहते हैं। परन्तु वियोग के भय से मेरा हृदय न जाने कैसे हुआ जा रहा है। आप कृपा करके मुझे ऐसी शक्ति दें कि मेरा हृदय

आपके ही सुख में सुख मानने लगे। एक बात और है, भगवान का अवतार इस बार रावण को मारने के लिये हो रहा है, वह आपका बड़ा भक्त है, उसने अपने सिर तक काटकर आपको चढ़ाये हैं। ऐसी स्थिति में आप उसको मारने के काम में कैसे सहायता कर सकते हैं?

भगवान् शंकर हंसने लगे। उन्होंने कहा—'देवि! तुम बड़ी भोली हो। इसमें वियोग की तो कोई बात ही नहीं है। मैं एक रूप से अवतीर्ण होकर उनकी सेवा करूँगा और एक रूप से तुम्हारे साथ रहकर तुम्हें उनकी लीलाएँ दिखाऊँगा और समय-समय पर उनके पास जाकर उनकी स्तुति-प्रार्थना करूँगा। रह गयी तुम्हारी दूसरी बात, सो तो जैसे रावण ने मेरी भक्ति की है, वैसी ही उसने मेरे अंश की अवहेलना भी की है। तुम तो जानती ही हो, मैं ग्यारह स्वरूपों में रहता हूं। जब उसने अपने दस सिर चढ़ाकर मेरी पूजा की थी, तब उसने मेरे एक अंश को बिना पूजा किये ही छोड़ दिया था। अब मैं उसी अंश के रूप में उसके विरुद्ध युद्ध कर सकता हूं। और अपने प्रभू की सेवा भी कर सकता हूं। मैंने वायु देवता के द्वारा अञ्जना के गर्भ से अवतार लेने का निश्चय किया

है। अब तो तुम्हारे मन में कोई दुःख नहीं है न ?' भगवती सती प्रसन्न हो गयीं।

## अन्जनी की कथा

देवराज इन्द्र की अमरावती में एक पुञ्जिकस्थला नाम की अप्सरा थी। एक दिन उससे कुछ अपराध हो गया, जिसके कारण उसे वानरी होकर पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ा। शाप देने वाले ऋषि ने बड़ी प्रार्थना के बाद इतना अनुग्रह कर दिया था कि वह जब जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर ले। चाहे जब वानरी रहे, चाहे, जब मानवी। वानर राज केसरी ने उसे पत्नी के रूप में ग्रहण किया था वह बड़ी सुन्दरी थी और उससे बहुत ही प्रेम करते थे।

एक दिन दोनों ही मनुष्य का रूप धारण करके अपने राज्य में सूमेरु के शृंगों पर विचरण कर रहे थे। मन्द-मन्द वायु बह रहा था। वायु के एक हल्के से झोंके से अंजना की साड़ी का पल्ला उड़ गया। अंजना को ऐसा मालूम हुआ कि मुझे कोई स्पर्श कर रहा है। वह अपने कपड़े को सम्हालती हुई अलग खड़ी हो गयी। उसने डांटते हुए कहा—'ऐसा ढीठ कौन है, जो मेरा पति व्रत नष्ट करना चाहता है! मेरे

इष्टदेव मेरे सामने विद्यमान हैं और कोई मेरा व्रत नष्ट करना चाहता है! मैं अभी शाप देकर उसे भस्म कर दूंगी। उसे प्रतीत हुआ मानो वायुदेव कह रहे हैं–'देवि! मैंने तुम्हारा व्रत नष्ट नहीं किया है। देवि! तुम्हें ऐसा पुत्र होगा, जो शक्ति में मेरे समान होगा, बल और बुद्धि में उसकी समानता कोई न कर सकेगा। मैं उसकी रक्षा करूँगा, वह भगवान् का सेवक होगा।' तदनन्तर अंजना और केसरी अपने स्थान पर चले गये। भगवान् शंकर ने अंशरूप से अंजना के कान के द्वारा उसके गर्भ में प्रवेश किया।

## हनुमान जन्म

चैत्र शुक्ला १५ मंगलवार के दिन अंजना के गर्भ से भगवान शंकर ने वानर रूप से अवतार ग्रहण किया। अंजना और केसरी के आनंद की सीमा न रही। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए बालक का लालन-पालन बड़े ही मनोयोग से होने लगा। अंजना कहीं जाती तो उन्हें अपने हृदय से सटा लेती, केसरी बालक को अपनी पीठ पर बैठाकर छलागें भरते और अपने शिशु को आनन्दित देखकर स्वयं आनन्दमय हो जाते।

एक दिन बच्चे को घर पर छोड़कर अञ्जना कहीं फल-फूल लाने के लिये चली गयी। केसरी पहले से ही बाहर गये थे। बालक घर में अकेला था और उसे भूख लगी हुई थी। उसने इधर-उधर देखा पर उसे कोई चीज न मिली। अन्त में उसकी दृष्टि सूर्य पर पड़ी। प्रातःकाल का समय था, उसने सोचा कि यह तो बड़ा सुन्दर लाल लाल फल है। यह खाने खेलने दोनों ही कामों में आयेगा। बालक ने सूर्य तक पहुंचने की चेष्टा की। वायु ने पहले ही उसे उड़ने की शक्ति दे दी थी अथवा यों भी कह सकते हैं कि भगवान् शंकर की लीला में यह आश्चर्य की कौन सी बात है।

## हनुमान सूर्य की ओर

वह बालक आकाश में उड़ने लगा। देवता, दानव यक्ष आदि उसे देखकर विस्मित हो गये। वायु के मन में भी शंका हुई। उन्होंने सोचा कि मेरा यह नन्हा सा बालक सूर्य की ओर दौड़ा जा रहा है। मध्याह्न काल के तरुण सूर्य की प्रखर किरणों से कहीं यह जल न जाय! उन्होंने हिमालय और मलयाचल से शीतलता इकट्ठी की और अपने पुत्र के पीछे-पीछे चलने लगे।

सूर्य ने भी देखा, उनकी दिव्य दृष्टि में बालक की महत्ता छिपी न रही। उनके मन में कई बातें आयीं, उन्होंने देखा कि स्वयं भगवान शंकर ही वानर बालक के वेश में मेरे पास आ रहे हैं। यह बात भी उनसे छिपी न रही कि मेरे पितृ तुल्य वायु देव के आशीर्वाद से ही इस बालक का जन्म हुआ है और वे स्वयं इसकी रक्षा करने के लिए आ रहे हैं। उन्होंने अपनी किरणें शीतल कर दीं, मानो वे अपने कोमल करों से स्पर्श करके अपने छोटे भाई को दुलारने लगे। अथवा जगत्पिता शंकर को अपने पास आते देखकर उनका स्वागत करने लगे। वह बालक सूर्य के रथ पर पहुंच गया। उनके साथ खेलने लगा।

## राहू और हनुमान

उस दिन ग्रहण था। अपना समय जानकर राहू सूर्य को ग्रसने के लिए आया। उसने देखा कि एक वानर बालक सूर्य के रथ पर बैठा हुआ है। परन्तु जब बालक के कठोर हाथ से वह पकड़ लिया गया तब वह भयभीत हो गया और किसी प्रकार अपने को छुड़ाकर भागा। वह सीधा देवराज इन्द्र के पास गया। उसने जाकर इन्द्र से कहा—'देवराज! आपने सूर्य

को ग्रसने का अधिकार मुझे दिया है। क्या अब आपने किसी दूसरे को भी यह अधिकार दे दिया है?' इन्द्र की समझ में यह बात न आई, उन्होंने राहू को डाँटकर फिर सूर्य के पास भेजा। दुबारा राहु के जाने पर बालक को अपनी भूख की याद आ गई। उसने सोचा कि यह खाने की अच्छी चीज है। बस राहु पर टूट पड़ा। राहु उस बालक के तेज से डर गया और अपनी रक्षा के लिए इन्द्र को पुकारने लगा। इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर उसकी रक्षा के लिए दौड़े। ऐरावत को देखते ही बालक ने राहु को छोड़ दिया और वह उसे एक अच्छा सा फल समझकर पकड़ने के लिए दौड़ा। अब इन्द्र ने डरकर अपना वज्र फेंका, जिससे बालक की बायीं हनु (ठुड्डी) टूट गई। बालक घायल होकर पहाड़ पर गिर पड़ा और छटपटाने लगा।

वायुदेव बालक को उठाकर गुफा में ले गये। उन्हें इन्द्र पर बड़ा क्रोध आया और उन्होंने अपनी गति बंद कर दी। वायु के बन्द होने से सब काठ-सरीखे हो गये। त्रिलोकी में कोई हिल-डुल तक नहीं सकता था। सबकी साँस बन्द हो गई। देवता लोग घबराये। इन्द्र दौड़े हुए ब्रह्मा के पास गए। उसी क्षण ब्रह्मा

पर्वत की उस गुफा में आये और अपने हाथों से बालक का स्पर्श करके उसे जीवित कर दिया, बालक प्रसन्नता के साथ उठ खड़ा हुआ। वायुदेव बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने सारे जगत में प्राणसंचार कर दिया। ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि 'यह बालक साधारण नहीं है।' यह देवताओं का कार्य साधन करने के लिए ही प्रकट हुआ है, इसलिये यह उचित है कि सब देवता इसको वरदान दें।

## देवताओं द्वारा हनुमान को वरदान

इन्द्र ने कहा—'मेरे वज्र के द्वारा इसकी हनु टूट गई है, इसलिये आज से इसका नाम हनुमान होगा और मैं वर देता हूं कि मेरे वज्र से हनुमान का कभी बाल बांका भी न होगा।' सूर्य ने कहा—'मैं अपना शतांश तेज इसे देता हूं। मेरी शक्ति से यह अपना रूप बदल सकेगा और जब इसे शास्त्र का अध्ययन करने की इच्छा होगी तो मैं सम्पूर्ण शास्त्रों का अध्ययन करा दूंगा। यह बड़ा भारी वाग्मी होगा। वरुण ने अपने पाश से और जल से निर्भय होने का वर दिया। कुबेर आदि देवताओं ने भी अपनी-अपनी ओर से हनुमान को निर्भय किया। विश्वकर्मा ने अपने

बनाए हुए दिव्यास्त्रों से अवध्य होने का वर दिया और ब्रह्मा ने ब्रह्मज्ञान दिया, चिरायु करने के साथ ही ब्रह्मास्त्र और ब्रह्मशाप से मुक्त कर दिया।

चलते समय ब्रह्मा ने वायुदेव से कहा—'तुम्हारा पुत्र बड़ा वीर, इच्छानुसार रूप धारण करने वाला और मन के समान तीव्रगामी होगा। इसकी गति अप्रतिहत होगी, इसकी कीर्ति अमर होगी और राम-रावण युद्ध में यह राम का सहायक तथा उनका प्रीति-भाजन होगा।' इस प्रकार हनुमान को वर देकर सब देवता अपने-अपने धाम को चले गए। अंजना और केशरी को यह सब सुनकर जो सुख हुआ, वह सर्वथा अनिर्वचनीय है।

## हनुमान जी की नटखटता

बचपन में हनुमानजी बड़े ही नटखट थे। एक तो वानर, दूसरे बच्चे और तीसरे देवताओं से प्राप्त इतना बल! रुद्र का अंश तो था ही, ऋषियों के आसन उठाकर पेड़ पर टाँग देते, उनके कमण्डलु का जल गिरा देते, उनकी लंगोटी फाड़ डालते। कभी-कभी किसी की गोद में बैठकर खेलते, एकाएक उनकी दाढ़ी नोंचकर भाग खड़े होते। उन्हें कोई बल पूर्वक तो

रोक ही नहीं सकता था, सब विवश थे। बड़े हुए, विद्याध्ययन का समय आ गया, परन्तु इनकी चंचलता जैसी-की-तैसी बनी रही। अंजना और केसरी बड़े ही चिन्तित हुए, उनसे जो कुछ उपाय हो सकता था उन्होंने किया, परन्तु हनुमान राह पर नहीं आए उन्होंने ऋषियों से प्रार्थना की, कि आप लोग कृपा करें, तभी यह बालक सुधर सकता है। ऋषियों ने विचार करके यह निश्चय किया कि इसे अपने बल का बड़ा घमंड है यदि यह अपना बल भूल जाये तो काम बन सकता है। उन्होंने हनुमान को शाप दे दिया कि तुम अपने बल को भूल जाओ, जब कोई कभी तुम्हें तुम्हारी कीर्ति याद दिलावेगा, तब तुम अपने बल का स्मरण करके पुनः ऐसे ही हो जाओगे।' हनुमान अपना बल भूल गए।

अब उनके विद्याध्ययन का समय आया, वानर राज केसरी ने उचित संस्कार कराके वेदाध्ययन के लिये उन्हें सूर्य के पास भेज दिया। वहाँ जाकर हनुमान ने समस्त वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन किया। उन्हें अध्ययन तो क्या करना था, साक्षात शिव थे, तथापि सम्प्रदाय-परम्परा की रक्षा करने के लिए उन्होंने सम्पूर्ण विद्याओं का अध्ययन किया। थोड़े

ही दिनों में वे अपने माता-पिता के पास लौट आये। सूर्य की कृपा से अपने पुत्र को सर्वविद्यापारंगत देख कर माता पिता को बड़ा आनन्द हुआ।

## हनुमान और मंदारी का खेल

भगवान राम अवतीर्ण हो चुके थे। भगवान शंकर उनकी बाल-लीला का दर्शन करने के लिए प्रायः ही अयोध्या में आते और अयोध्या में रहते। वे किसी दिन ज्योतिषी बनकर भगवान का हाथ देखते तो किसी दिन भिक्षुक बनकर उन्हें आशीर्वाद देते। जब भगवान राम खेलने के लिए महल से बाहर आने लगे, तब एक दिन एक मदारी आया। उसके साथ एक परम सुन्दर नाचने वाला बन्दर था। मदारी डमरू बजाता हुआ राज महल के फाटक पर जा पहुचा। बहुत से लड़के इकट्ठे हो गए, भगवान राम भी अपने भाइयों के साथ आ गये। यह बन्दर थोड़े ही था, यह तो अपने भगवान को रिझाने के लिए ही हनुमान रूप में प्रकट होने वाले स्वयं शिव थे। नाचने वाले भी आप, नचाने वाले भी आप। यह सब किस लिए, केवल अपने प्रभु की मधुर लीला देखने के लिए उनके साथ खेलने के लिए और उनकी प्रसन्नता के लिए।

आखिर भगवान रीझ गए। बन्दर का नाच देख कर सब लोग लौटने लगे, परन्तु भगवान् राम अड़ गए। उन्होंने कहा कि मैं तो यह बन्दर लूंगा। राजकुमार का हठ भला कैसे टाला जाता। महाराज दशरथ ने आज्ञा दी कि बन्दर के बदले में मदारी जितना धन चाहे ले ले, बन्दर श्याम सुन्दर को दे जाय। मदारी धन के लिए तो आया नहीं था, वह आया था, अपने आपको प्रभु के चरण-कमलों में समर्पित करने के लिए। भगवान राम ने अपने हाथों उस बन्दर को ग्रहण किया अब तक वे अपने आपको स्वयं नचा रहे थे और अब नचाने वाले हुए भगवान राम तथा नाचने वाले हुए स्वयं वे, युग-युग की अभिलाषा पूरी हुई, वे आनन्दातिरेक से नाचने लगे, सब लोग उस बन्दर का नाच देखने में तन्मय हो गए और मदारी लापता हो गया। पता नहीं, वह मदारी बन्दर में ही प्रवेश कर गया या अपना काम पूरा हो जाने पर कैलाश चला गया।

इस रूप में हनुमान बहुत दिनों तक भगवान् राम की सेवा और मनोरंजन करते रहे। जब विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को ले जाने के लिए आये, तब भगवान् ने उन्हें एकान्त में बुलाकर समझाया।

उन्होंने कहा—'हनुमान ! तुम मेरे अन्तरंग सखा हो तुमसे मेरी कोई लीला छिपी नहीं है। आगे चलकर मैं रावण को मारूँगा। उस समय मुझे वानरों की आवश्यकता होगी। रावण ने बालि को मिला रखा हैं। खर-दूषण, त्रिशिरा, शूर्पणखा दण्डकवन में हैं, मारीच, सुबाहु, ताड़का हमारे पड़ोस में ही हैं, उनका जाल चारों ओर फैला हुआ है तुम शबरी से मिलकर ऋष्यमूक पर्वत पर जाओ और वहाँ सुग्रीव से मित्रता करो। मैं धीरे-धीरे रास्ता साफ करता हुआ वहाँ जाऊंगा, तब तुम सुग्रीव को मुझसे मिलाना और वानरी सेना एकत्रित करना। फिर रावण को मारकर अवतार कार्य पूरा किया जायेगा।'

भगवान को छोड़कर जाने की इच्छा न होने पर भी हनुमान ने भगवान् की आज्ञा शिरोधार्य की और उनका नाम स्मरण करते हुए उन्होंने ऋष्यमूक पर्वत के लिए प्रस्थान किया।

## हनुमान सुग्रीव मित्रता

उन दिनों बालि से भयभीत होकर सुग्रीव अपने मंत्रियों के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। हनुमान भी उन्हीं के साथ थे। सुग्रीव प्रायः डरते ही रहते

थे कि कहीं बालि का भेजा हुआ कोई उसका मित्र आकर हम पर आक्रमण न कर दे, क्योंकि शाप के कारण बालि स्वयं वहाँ नहीं आ सकता था। एक दिन वे मन्त्रियों और अपने प्रिय सहचर हनुमान के साथ बैठकर कुछ राजनीतिक चर्चा कर रहे थे। एकाएक उनकी दृष्टि पंपासर की ओर चली गयी। उन्होंने देखा कि वहाँ दो सशस्त्र व्यक्ति खड़े हैं। उनका उद्देश्य तो ठीक-ठीक नहीं जान पड़ता, परन्तु वे किसी खोज में मालूम पड़ते हैं। उनकी चाल-ढाल उनका वीरोचित शरीर, उनके शस्त्र-अस्त्र और साथ ही उनके वल्कल वस्त्र और जटाओं को देखकर सुग्रीव को बड़ी शंका हुई। उन्होंने हनुमान से कहा कि 'भाई! पता लगाओ ये दोनों वीर पुरुष कौन हैं। यदि शत्रु पक्ष के हों तो यहाँ से भाग चलना चाहिए और यदि उदासीन हों तथा उन्हें भी किसी सहायता की आवश्यकता हो तो उनसे मित्रता कर ली जाय और एक दूसरे की इष्ट-सिद्धि में सहायक हों। तुम ब्रह्मचारी का वेष धरकर उनका पता लगाओ। फिर जैसा हो, इशारे से मुझे सूचितकर देना।' हनुमानने उसकी आज्ञा स्वीकार की।

सुग्रीव के कहने से हनुमान ब्राह्मण का वेष बनाकर उनके पास गये। उन्होंने योग्य शिष्टाचार के पश्चात

उन दोनों की प्रशंसा करते हुए उनका परिचय पूछा। उन्होंने कहा—'आपके शस्त्रास्त्र और शरीर की वीरोचित गठन देखकर ऐसा अनुमान होता है कि आप वीर पुरुष हैं। आपके कोमल चरणों को देखकर जान पड़ता है कि आप राज महल के रहने वाले हैं। कभी जंगल अथवा पहाड़ में नहीं रहना पड़ा है। आपकी वेश भूषा को देखकर यही कहा जा सकता है कि आप के मुखमण्डल का तेज स्पष्ट बता रहा है कि आप ऋषिकुमार हैं, परन्तु कोई बात निश्चित नहीं। आप साधारण पुरुष नहीं, अलौकिक हैं। क्या आप तीनों देवताओं में से कोई हैं। कहीं आप साक्षात नर नारायण ही तो नहीं हैं। मेरे मन में बड़ी शंका हो रही है। आप में बड़ा आकर्षण मालूम पड़ रहा है! आपके सौन्दर्य और माधुर्य से मेरा चित्त मुग्ध हुआ जा रहा है, आप मेरे अत्यन्त ममतास्पद जान पड़ते हैं। मैं आपके साथ कभी रहा हूं, मेरा हृदय बार-बार यह बात कह रहा है, आप कृपा करके मेरा संदेह दूर करें।

भगवान राम मन्द-मन्द मुस्कराते हुए हनुमान की बात सुन रहे थे। उन्होंने लक्ष्मण की ओर देखकर कहा—'ये ब्राह्मण बड़े बुद्धिमान हैं। इनकी बातों से मालूम पड़ता है कि इन्होंने सांगोपांग वेदों का

अध्ययन किया है। इनके बोलने में एक भी अशुद्धि नहीं हुई है इनकी आकृति पर ऐसा कोई लक्षण नहीं प्रकट हुआ है, जिनसे इनका भाव दूषित कहा जा सके। ये किसी राजा के मंत्री होने के योग्य हैं। इनकी उच्चारण शैली और नीतिमत्ता दोनों ही गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक हैं।' राम के इशारे से लक्ष्मण ने कहा 'ब्राह्मणदेव ! हम लोग अयोध्यानरेश महाराज दशरथ के पुत्र है। उनकी आज्ञा मानकर चौदह वर्ष के लिए वन में आये हैं। यहां किसी राक्षस ने जनक नन्दिनी सीता का अपहरण कर लिया है। हम लोग उन्हीं को ढूंढ़ते हुए इधर घूम रहे हैं। अब तुम अपना परिचय दो।'

लक्ष्मण की बात समाप्त होते-न-होते हनुमान का रूप बदल गया। वे वानर के रूप में भगवान के चरणों पर गिर पड़े। उस समय उनका हृदय कह रहा था कि मैं भगवान के सामने दूसरा वेष धारण करके आया, इस प्रकार से उनसे कपट किया, इसी से उन्होंने मुझसे बातचीत तक नहीं की। मैंने उन्हें नहीं पहचाना इसलिए उन्होंने भी मुझे नहीं पहचाना। मैंने उनका परिचय पूछा तो उन्होंने भी मुझसे परिचय पूछा, यह सब मेरी कूटनीति का फल है। मैं अपराधी हूं, यह

सोचते-सोचते उनकी आंखों से आँसुओं की धारा बहने लगी, वे भगवान के चरणों में लोटने लगे। भगवान ने उन्हें बलात उठाकर हृदय से लगाया।

हनुमान ने कहा—'प्रभो ! मैं पशु हूं। साधारण जीव हूं। मैं आपको भूल जाऊँ, मैं आपके सामने अपराध करूँ, यह स्वाभाविक है। परन्तु आप मुझे कैसे भूल गए। मैं तो आपकी आज्ञा से सुग्रीव के पास रह कर बहुत दिनों से आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। सुग्रीव भी बड़े दुखी हैं। मैंने उन्हें आपका परिचय देकर ढाढ़स बंधा रखा है। उन्हें अब एक मात्र आपका ही भरोसा है, अब आप चलकर उन्हें स्वीकार कीजिए और उनकी विपत्ति टालकर उनसे सेवा लीजिये।' हनुमान ने आनंदमग्न होकर दोनों भाइयों को अपने दोनों कंधों पर बैठा लिया और वे उन्हें सुग्रीव के पास ले चले।

राम और सुग्रीव की मित्रता हुई। उन्होंने अग्नि को साक्षी बनाकर सख्य-सम्बंध स्थापित किया। बालि मारा गया और सुग्रीव वानरों के राजा हुए। चौमासे में भगवान राम और लक्ष्मण प्रवर्षण गिरि पर निवास करते रहे। सुग्रीव भोग-विलास में पड़कर राम का काम भूल गए। परन्तु हनुमान कैसे भूलते। उन्होंने

कई बार सुग्रीव को समझाने की चेष्टा की, किन्तु सुग्रीव ने सुनी-अनसुनी कर दी। वे अपने काम में लग गए, जब लक्ष्मण ने सुग्रीव को उपेक्षा करते देखा, तब वे बड़े क्रोधित हुए। अभी उन्हें तारा मना ही रही थी कि हनुमान के बुलाये हुए वानर-भालुओं की अपार सेना आ पहुंची। यह उद्योग देखकर लक्ष्मण सुग्रीव पर प्रसन्न हो गए। सुग्रीव भगवान राम के पास आये और उन्होंने अपने प्रमाद के लिए क्षमा मांगी। भगवान राम के पास देश-देशान्तरों का वर्णन करके सुग्रीव सीता को ढूंढ़ने के लिए वानरी सेना भेजने लगे। सीता के सम्बन्धों में इतना पता तो था ही कि रावण उन्हें दक्षिण दिशा में ले गया है, परन्तु वानरों को सब ओर भेजने का अभिप्राय यह था कि और वानर इकट्ठे किए जायें तथा यदि रावण ने सीता को कहीं अन्यत्र रख दिया हो तो उसका भी पता चल जाय। सुग्रीव ने शासक के शब्दों में कहा—'जो एक महीने में निर्दिष्ट स्थानों का पता लगाकर नहीं लौटेगा, उसे मैं बड़ा कठोर दण्ड दूंगा।' सबने निर्दिष्ट दिशाओं की यात्रा की।

———

## सीता जी की खोज

दक्षिण दिशा में ढूंढ़ने का काम बड़ा ही महत्व-पूर्ण था। इसलिए यह काम मुख्य-२ वानर-वीरों को ही सौंपा गया। जाम्बवान्, हनुमान, अंगद, नल, नील आदि को बुलाकर उनके काम की गुरुता समझाई। उनके मन में उस समय यह भाव उठा कि ये वीर अवश्य ही अपना काम पूरा करेंगे, विशेष करके हनुमान के लिए तो कोई काम असम्भव है ही नहीं। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता और प्रेम से कहा–'हनुमान ! जल में, थल में, नभ में, सर्वत्र तुम्हारी एक सी गति है। स्वर्ग अथवा अंतरिक्ष में भी ऐसा कोई नहीं, जो तुम्हारी गति रोक सके। तुम अपने पिता के समान ही गति, वेग, तेज और स्फूर्ति से युक्त हो। तुम सब कुछ जानते ही हो, तुमसे और क्या कहूँ ? तुम्हारा काम केवल स्थानों में देख आना ही नहीं है, बल्कि तुम्हारा काम सीता को पाना है। मेरा तुम पर पूर्ण विश्वास है कि तुम सीता का पता लगाकर ही लौटोगे।'

सुग्रीव की बात सुनकर भगवान राम ने हनुमान को बुलाया। भगवान तो पहले से ही जानते थे, परंतु सुग्रीव की बातों से उन्हें और भी स्मृति हो आई।

उन्होंने हनुमान से कहा—'हनुमान ! तुम मेरा कार्य अवश्य पूर्ण करोगे । यह मेरी अंगूठी ले जाओ, इसे देखकर सीता विश्वास कर लेंगी कि तुम राम के दूत हो ।' सीता से कहने के लिए उन्होंने संदेश भी दिए । हनुमान आदि उनके चरणों का स्पर्श करके वहां से चल पड़े ।

हनुमान, जाम्बवान, अंगद आदि ढूंढ़ते-२ थक गए । भूख प्यास के मारे व्याकुल हो गए । पानी का कहीं पता नहीं, कई दिन से फलों के दर्शन भी नहीं मिले । सारी जिम्मेदारी हनुमान पर आयी । उस भीषण पर्वत के एक शृंग पर चढ़कर उन्होंने देखा तो पास ही कुछ हरियाली दीख पड़ी । कुछ सुन्दर-सुन्दर पक्षी अपने पंखों से पानी छिड़कते हुए आते दीख पड़े अनुमान हुआ कि यहां कोई सुन्दर बगीचा और जलाशय होगा । सबको लेकर वे उधर ही गए । वहां जाने पर मालूम हुआ कि एक गुफा में से ही ये सब निकल रहे हैं । एक दूसरे का हाथ पकड़कर भगवान राम का स्मरण करते हुए वे गुफा में घुस पड़े । बड़ी ही सुन्दर गुफा थी, वहां के झरने में अमृतमय जल था, सोने के वृक्ष थे और उनमें बड़े ही स्वादिष्ट फल लगे हुए थे वहां की तपस्विनी से अनुमति लेकर सबने खाया पीया, स्वस्थ हुए ।

उस तपस्विनी के पूछने पर हनुमान ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया और इच्छा प्रकट की कि जहाँ तक हो सके शीघ्र ही हम लोग यहाँ से निकल जायँ तो अच्छा है। उस तपस्विनी ने कहा–'भैया यहाँ आने पर कोई जीवित नहीं लौटता। यह निर्विघ्न तपस्या करने का स्थान है, यदि लोग यहां से लौटने लगे तो यहाँ की तपस्या में विघ्न पड़े। परन्तु तुमने मुझे भगवान राम की कथा सुनाई है, इसलिए तुम लोगों को तपस्या के बल से मैं यहां से निकाल ले चलती हूं। मुझे भी भगवान राम के दर्शन के लिए प्रवर्षण गिरि पर जाना है। अच्छा, अब तुम लोग अपनी आंखें बंद कर लो।' वानर भालुओं ने अपने-अपने हाथों से अपनी-२ आंखें बन्द कर लीं। क्षणभर में ही उन्होंने देखा कि सब समुद्र के किनारे एक ऊंचे पर्वत पर खड़े हैं। हनुमान से अनुमति लेकर वह तपस्विनी भगवान राम के दर्शन के लिए चली गई।

अंगद ने कहा–'भाई! अब एक महीना बीत गया, न तो हम लोग जानकी का पता लगा सके और न जहाँ जहाँ जाना चाहिए था, वहाँ वहाँ जा ही सके। अब वहाँ जाने पर सुग्रीव मुझे अवश्य मार डालेंगे। इसलिए मैं अब यहां रहकर तपस्या करूंगा।

तुम लोग जाओ।' हनुमान ने कहा—'युवराज ! आप असमय हो क्यों हिम्मत हार रहे हैं ? सुग्रीव आपसे बड़ा प्रेम करते हैं। आप अपने जी जान से भगवान राम का कार्य सिद्ध होने के लिए चेष्टा करते रहे हैं। गुफा में जाने के कारण हम लोगों को देर हो गयी है, वे अवश्य क्षमा कर देंगे और आपको राजा बनायेंगे। आप घबराइये मत ! भगवान् राम बड़े दयालु हैं, वे सर्वथा आपकी रक्षा करेंगे। चलिए हम लोग अपनी शक्ति भर उनकी आज्ञा का पालन करें। यदि आप सुग्रीव से द्वेष करते हैं, उनके राजा होने से आपको दुःख हुआ है और यहां रहकर बचना चाहते हैं तो यह कदापि सम्भव नहीं है। आप राम के काम से जी चुराकर चाहे जहाँ भी छिपें, लक्ष्मण के बाणों से नहीं बच सकते। उनका काम न करने पर जब बच ही नहीं सकते तो उनके पास चलना ही अच्छा है, जैसा वे करेंगे वैसा होगा।' हनुमान की बात सुनकर अंगद ने जीवित रहने का संकल्प तो छोड़ दिया, परंतु उन्होंने सुग्रीव के पास जाने की अपेक्षा वहीं अनशन करके प्राण त्याग करना अच्छा समझा। उनके साथ सभी अनशन करने लगे। राम चर्चा होने लगी।

उसी समय सम्पाती के दर्शन हुए। उससे सीता

का पता मालूम हुआ, सब वानर-भालू समुद्र के तट पर इकट्ठे हुए, कौन पार जा सकता है, इस विषय पर विचार होने लगा। अंगद के अत्यन्त ओजस्वी भाषण देने पर सबने अपनी शक्ति पृथक्-पृथक् बतायी और समुद्र पार जाने में असमर्थता प्रकट की। अंगद ने भी कहा—'मैं किसी प्रकार पार तो जा सकता हूं, परन्तु लौट सकूंगा या नहीं इसमें कुछ संदेह है।' जाम्बवान् ने उन्हें युवराज कहकर सम्मानित किया और उनके जाने का विरोध किया उन्होंने स्वयं भी अपनी वृद्धता के कारण जाने में लाचारी प्रकट की। अब तक हनुमान चुप थे। वे एक कोने में बैठे-बैठे सबकी बातें सुन रहे थे। अंगद निराश हो गए थे। सीता का समाचार मिलने पर वानरों में जो प्रसन्नता आ गयी थी, उसका अब कहीं पता नहीं था। जाम्बवान् ने अंगद को सम्बोधित करके कहा—'युवराज! निराश होने का कोई कारण नहीं है। समुद्र पार जाने के लिए केवल बल की ही आवश्यकता नहीं है, विशाल बुद्धि की भी आवश्यकता है। इस काम के लिए भगवान् शंकर ने स्वयं अवतार धारण किया है। राक्षसों का संहार अवश्यम्भावी है।' उन्होंने हनुमान की ओर देखकर कहा—'हनुमान! तुम चुपचाप कैसे

बैठे हो ? तुम्हारा जन्म ही राम के काम के लिए हुआ है। वायुनन्दन ! तुम अपने पिता के समान क्षण-भर में ही समुद्र पार हो सकते हो। तुम्हारी बुद्धि अप्रतिम है। तुम विवेक और ज्ञान के निधान हो तुम अपने अन्दर इतना बल लेकर चुपचाप कैसे बैठे हो ? जाम्बवान् ने हनुमान के जन्म देवताओं के वर-दान और ऋषियों के शाप की कथा कही तथा स्मरण कराया कि तुम जो चाहो कर सकते हो।

## हनुमान जी को उनकी शक्ति का स्मरण करवाना

हनुमान निरन्तर भगवान् के स्मरण में ही तन्मय रहते थे। उन्हें अपने आपकी अथवा अपने बल की स्मृति ही नहीं रहती थी। जाम्बवान् की बात सुनते ही उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि मुझ में अपार शक्ति है। मुझ पर भगवान् की अनन्त कृपा है और भगवान् की सारी शक्ति मेरी शक्ति है। उनका शरीर बढ़कर सुमेरु पर्वत का सा हो गया। उन्होंने गर्जना करते हुए कहा—'इस समुद्र में क्या रक्खा है, भगवान की कृपा से मैं ऐसे-ऐसे सैकड़ों समुद्र लाँघ सकता हूं। यदि लङ्का में मुझे सीता न मिलती तो मैं स्वर्ग से लेकर

ब्रह्मलोक तक छान डालूंगा, लङ्का के साथ त्रिकूट पर्वत को उखाड़ लाऊँगा, रावण को मार डालूंगा, ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो भगवान् का कार्य करते समय मेरे मार्ग में कोई रोड़ा अटका सके।' हनुमान की गर्जना सुनकर सम्पूर्ण वानरी सेना हर्षनाद करने लगी। जाम्बवान् ने कहा—'हनुमान! तुम सब कुछ कर सकते हो, परन्तु इस समय यह सब करने की आवश्यकता नहीं। तुम केवल सीता को देख आओ। भगवान् राम के साथ हम सब लंका चलेंगे, भगवान के बाणों से राक्षसों का उद्धार होगा, राम की कीर्ति होगी और हम सब आनन्दोत्सव मनायेंगे!' जाम्बवान् की बात सुनते ही हनुमान उछलकर एक बड़े ऊँचे पर्वत शृंग पर चढ़ गए। उनके चरणों के आघात से बड़े-बड़े पर्वत शृंग टूटकर गिरने लगे, उनकी पूंछ की चोट से बड़े-बड़े वृक्ष आकाश में उड़ने लगे। उनमें से टूटकर बहुत से फूल हनुमान पर इस प्रकार गिर रहे थे, मानो वे उनकी पूजा कर रहे हों। देवताओं ने जय-जयकार किया, ऋषियों ने शान्ति पाठ किया, वायु ने सहायता की, समुद्र पार जाने के लिए हनुमान उछल पड़े। उन्होंने भगवान को स्मरण करके वानरों को आश्वासन दिया कि मेरे मन में बड़ा उत्साह है,

बड़ा हर्ष है, भगवान की असीम कृपा का अनुभव हो रहा है, मैं काम पूरा करके शीघ्र ही आऊंगा, तुम लोग घबराना मत और फिर भगवान के नाम की जयध्वनि करके वे चल पड़े। उनके वेग से प्रभावित होकर बहुत से वृक्ष उनके साथ उड़ने लगे। दल-के-दल बादल उनके शरीर के कठोर स्पर्श से तितर-बितर होकर स्वरूप उनके शरीर पर कुछ शीतल जल बिन्दू डालने लगे। श्री मारुतिराय और किसी ओर न देख कर आकाश मार्ग से ही चले जा रहे थे।

## हनुमान और मैनाक पर्वत

समुद्र ने सोचा कि राम के पूर्वजों ने ही मुझे यह रूप दान किया है, परन्तु मैंने उनका कोई उपकार नहीं किया। कहीं राम के मन में यह बात न आ जाय कि सीता हरण में समुद्र का भी हाथ रहा है, क्योंकि एक प्रकार से रावण मेरे अन्दर ही रहता है। मैं ही उसके किले की खाई हूं, यदि मैं उनके दूत का स्वागत करूं, उनके विश्राम के लिए कोई उपाय कर सकूं तो सम्भव है मैं इस लांछन से बच जाऊँ।' उसने मैनाक से कहा—'मैनाक ! रामदूत का स्वागत करो।' मैनाक बड़ा विशाल रूप धारण करके समुद्र के ऊपर निकल

आया। हनुमान ने समझा कि यह कोई विघ्न है। वे अपने पैरों के प्रहार से उसे पाताल गामी करने ही जा रहे थे कि मैनाक मनुष्य का रूप धारण करके अपने शृंग पर खड़ा हो गया और उसने निवेदन किया कि 'हनुमान! तुम मेरे सहायक वायु के पुत्र हो। जब इन्द्र अपने वज्र द्वारा पर्वत की पाँखें काट रहे थे, तब तुम्हारे पिता की सहायता से ही मैं समुद्र में आ घुसा और अपने को बचा सका। मैं तुम्हें विश्राम देना चाहता हूं, थोड़ी देर थकावट मिटाकर फिर जाना। भगवान राम का काम तो सारे जगत् का काम है न! उनके दूत की सहायता करना सारे जगत की सहायता करना है, आशा है तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार करोगे।

हनुमान ने बड़े प्रेम से अपने हाथों द्वारा मैनाक का स्पर्श किया और कहा—'मैनाक! तुम मुझ पर बड़ा स्नेह रखते हो। तुम मेरे पिता के समान वंदनीय हो। मुझे तुम्हारी आज्ञा का पालन करना चाहिए, परन्तु मैं इस समय भगवान राम के काम से जा रहा हूं। मेरा हृदय उनके काम के लिए अशान्त है। यदि मैं विश्राम करने के लिए अपने शरीर को रोक दूं तो सम्भव है कि मेरा हृदय शरीर को यहीं छोड़कर

लंका में पहुंच जाय । इस समय मैं एक क्षण भी नहीं रुक सकता, मुझे क्षमा करो ।' हनुमान चलते-चलते इतना कहकर आगे बढ़े ।

## हनुमान जी का सुरसा के मुख से निकलना

देवताओं ने सोचा कि हनुमान में बल तो है, विद्या की भी कई बार परीक्षा हो चुकी है, परन्तु राक्षसों के बीच में जाकर सकुशल लौट आने की बुद्धि इनमें है या नहीं, यह बात जान लेना चाहिए । उन्होंने दक्षपुत्री, कश्यपपत्नी और नाग माता सुरसा को हनुमान की परीक्षा के लिए भेजा । वह आकर हनुमान के मार्ग में खड़ी हो गयी और कहने लगी कि आज मुझे प्रारब्धवश भोजन मिला है, मैं पेट भर खाऊंगी । हनुमान ने पहले तो यही कहा कि राम का काम है, मुझे कर लेने दो, तब खा जाना । मैं मृत्यु से नहीं डरता ।' परन्तु जब उसने अस्वीकार कर दिया, तब हनुमान ने मुंह फैलाने को कहा जितना ही मुंह फैलाती, हनुमान उसके दुगुने हो जाते । जब उसने सौ योजन का मुँह बना लिया तब हनुमान छोटा-सा रूप बनाकर उसके मुँह में घुसकर फिर बाहर निकल आये । हनुमान के बुद्धि कौशल को देखकर सुरसा

बहुत प्रसन्न हुई और उसने सफलता का आशीर्वाद देकर विदा किया।

राहु की माता सिंहिका समुद्र में ही रहती थी। ऊपर उड़ने वालों की छाया जल में पड़ती तो वह छाया को पकड़ लेती और उड़ने वाला विवश होकर जल में गिर पड़ता। इस प्रकार वह अनेकों का संहार कर चुकी थी। हनुमान के साथ भी उसने वही चाल चली। अपनी गति को रुकती देखकर हनुमान ने नीचे दृष्टि डाली और उस राक्षसी को पहचान लिया। भला वह हनुमान के सामने क्या ठहरती, एक हल्की सी चोट में ही उसका काम तमाम हो गया और हनुमान निर्विघ्न समुद्र के दूसरे तट पर पहुंच गए। बड़ा सुन्दर वन था। हरे-भरे वृक्ष, सुगन्धित पुष्प, पक्षियों का कलरव और भौरों की गुंजार बरबस मन को अपनी ओर खींच रही थी। परंतु हनुमान ने उनकी ओर देखा तक नहीं, वे कूदकर पहाड़ के एक ऊँचे टीले पर चढ़ गये। उन्होंने निश्चय किया कि यह स्थान शिविर बनाने के योग्य है। वानरों के लिए यहां फल-मूल भी पर्याप्त हैं। मीठा जल भी है और सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ से पूरी लंका दीख रही है। हनुमान ने वहां से लंका की बहुत सी बातें

जान लीं। उन्होंने लंका-दुर्ग की दुर्गमता का अनुमान करके निश्चय किया कि इसकी एक-एक बात जान लेनी चाहिए। सीता को ढूंढ़ने के साथ-साथ यह काम कर लेना भी मेरा कर्तव्य है।

## हनुमान का लंका में प्रवेश

इतने बड़े विशाल शरीर से लंका में जाना और वहाँ की प्रत्येक बात को गौर से देखना असम्भव था, इसलिए महावीर हनुमान ने मानो अणिमा सिद्धि का प्रयोग करके अपने को छोटा-सा बना लिया और भगवान का स्मरण करते हुए वे लंका के द्वार पर पहुंचे। लंका नगर की अधिष्ठात्री देवी लंकिनी ने संध्या समय छिपकर इन्हें घुसते हुए देखा। उसे बड़ी शंका हुई। उसने हनुमान के पास आकर डाँटा—'क्या तुम चोरी करना चाहते हो? हनुमान ने एक हल्का सा गूँसा उसकी पीठ पर जमाया और वह खून उगलती हुई जमीन पर धम से गिर पड़ी। उसने अपने को सम्हालकर कहा—'जाओ, मैं तुम्हें पहचान गयी। ब्रह्मा ने मुझे पहले ही बता दिया था कि जब वानर के मारने से तुम्हारी ऐसी दशा हो जाय, तब जान लेना कि रावण का अन्त आ गया है।' हनुमान

ने अन्दर प्रवेश किया। उन्होंने लंका में प्रवेश करके राक्षसों के आहार विहार और शयनादि के स्थान देखे। उनके अस्त्रागार, मन्त्रणागृह छावनी आदि भी देखे। सीता को ढूँढने के लिए उन्होंने राक्षसराज रावण के अन्तःपुर में भी बड़ी छान बीन की, मन्दोदरी आदि स्त्रियों को भी देखा, परन्तु सीता का कहीं पता न चला। वे चिन्तित हो गए। उनके मन में बड़ी ग्लानि हुई, वे सोचने लगे कि 'कहीं मैंने धर्म का उल्लंघन तो नहीं किया है। पर-स्त्रियों को देखना अधर्म है। मैंने अब तक कभी यह पाप नहीं किया था। आज मुझसे बड़ा अन्याय हुआ।' वे चिन्ता में पड़ गए। दूसरे ही क्षण उनके मन में दूसरी बात आयी। उस समय भगवान के स्मरण से उनका चित्त स्वच्छ हो गया था और वे एक निश्चय पर पहुच चुके थे। उन्होंने सोचा कि 'मैंने पर स्त्रियों को देखा तो अवश्य है, परन्तु उन्हें बुरी दृष्टि से नहीं देखा है। आवश्यकता वश देखा है और मेरे मन में तनिक भी विकार नहीं है। इन्द्रियों की शुभ या अशुभ प्रवृत्ति में मन ही कारण हुआ करता है और मेरा मन सुव्यवस्थित है। मैं सीता को और कहां ढूंढता। स्त्री को हरिणियों में तो ढूंढा नहीं जाता, स्त्रियों में ही ढूंढ़ा जाता है।

मैंने शुद्ध मन से ही ढूंढ़ा है, इसलिए मेरा कोई दोष नहीं है। हनुमान ने और स्थानों में भी ढूंढ़ने का प्रयत्न किया। आगे बढ़ने पर उन्हें एक छोटा सा कुटीर मिला। उस कुटीर की भीत पर जगह-जगह राम नाम लिखे हुए थे जो कि मणियों की जगमगाहट के कारण रात में भी स्पष्ट दीख रहे थे। छोटी छोटी क्यारियों में तुलसी के वृक्ष, केसर और सुगन्धित फूल लगे हुए थे। उस समय पर्णकुटी के सामने ही एक छोटा सा भगवान का मन्दिर था और उस पर भगवान के आयुधों के चित्र बने हुए थे। हनुमान को बड़ा आश्चर्य हुआ कि लंका में ऐसा स्थान कहाँ! उन्हें हर्ष भी हुआ।

## हनुमान-विभीषण मिलन

ब्रह्ममुहूर्त का समय था। विभीषण जागकर राम-राम करने लगे थे, हनुमान को यह विश्वास हो गया कि यह तो कोई संत है। उन्होंने उनसे परिचय करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। हनुमान ने ब्राह्मण का रूप धारण करके राम-राम की ध्वनि की, विभीषण तुरन्त बाहर निकल आए, दोनों भगवद्भक्त परस्पर गले लगे, दोनों के हृदय प्रेम और आनन्द से भर गए।

हनुमान को विभीषण के हृदय में साक्षात् भगवान् दीख रहे थे और विभीषण हनुमान को मानो साक्षात् भगवान् ही समझ रहे थे। परिचय हुआ। हनुमान के पास कहने के लिए अपनी बात तो थी ही क्या, उन्होंने अपने दयालु प्रभु के पावन चरित्र और सीता हरण का प्रसंग सुनाकर अपने आने का कारण बताया। विभीषण ने कहा—'प्यारे हनुमान ! मैं यहाँ वैसो ही सतर्कता और कठिनता से रहता हूं, जैसे दांतों के बीच बेचारी जीभ रहती है। प्रभु मुझ अनाथ को भी कभी अपनायेंगे ? मेरी जाति तमोगुणी है। मुझसे कुछ साधन बनता नहीं। भगवान् के चरणों में प्रेम है नहीं, मैं कैसे आशा करूँ कि मुझे भगवान् मिलेंगे, परन्तु अब तुम्हें देखकर मेरे मन में निश्चय हो रहा है, क्योंकि भगवत्कृपा के बिना उसके कृपापात्र संतों का दर्शन नहीं होता। भगवान् की कृपा से ही तुमने घर आकर मुझे दर्शन दिये हैं। निश्चय ही सन्तदर्शन भगवान् के मिलने की सूचना है।' हनुमान ने कहा—'विभीषण ! हमारे भगवान् बड़े ही दयालु हैं। वे सर्वदा से दीन जनों पर कृपा करते आए हैं। तुम तो अपनी बात कहते हो। भला मैं ही कौन सा कुलीन हूं। वानर चंचल और साधनहीन ! दूसरों की भलाई

तो मुझसे दूर रहो, यदि प्रातःकाल कोई मेरा नाम ले ले तो उसे दिन भर भोजन न मिले। सखे विभीषण ! मैं इतना अधम हूं, फिर भी मुझ पर भगवान् ने कृपा की है। जो ऐसे स्वामी को जानकर भी नहीं भजते, संसार में भटकते रहते हैं, वे दुखी क्यों न होंगे ? भगवान् की गुणावली का स्मरण करके हनुमान का हृदय गद्‌गद् हो गया, उनकी आंखें प्रेम के आंसुओं से भर गयीं। विभीषण और हनुमान में बहुत सी बातें हुइं। विभीषण के बतलाने पर हनुमान अशोक वन में गए।

## हनुमान अशोक वन में

मां सीता अशोक के नीचे बैठी हुई थीं। उनका शरीर सूख गया था, बालों की जटा बंध गयी थीं, सिर पर सौभाग्य का चिह्न एक वेणीमात्र था। वे निरन्तर भगवान् के नाम का जप और मन ही मन भगवान् की लीला तथा गुणों का स्मरण कर रही थीं। हनुमान ने दूर से ही उन्हें मानसिक प्रणाम किया और शीशम के एक वृक्ष पर चढ़कर बैठ गए। रावण आया और उसने सीता को फुसलाने की चेष्टा की, फिर धमकाया, पर सीता की दृढ़ता, पवित्रता, राम

निष्ठा और सतीत्व से प्रभावित होकर वह लौट गया। बहुत सी राक्षसियां सीता को रावण के अनुकूल करने के लिए समझाने लगीं। इन बातों से सीता को बड़ी पीड़ा हुई। राम का पता न चलने के कारण उनके अनिष्ट की भी आशंका हुई, ऐसा मालूम हुआ कि अब वे जीवित नहीं रहेंगी। त्रिजटा अपने स्वप्न का वृत्तान्त कहकर उन्हें आश्वासन देने लगी और बहुत सी राक्षसियां वहाँ से चली गयीं। थोड़ी देर बाद त्रिजटा भी चली गयी।

## हनुमान और सीता माता

सीता को अत्यन्त व्यथित देखकर हनुमान ने राम जन्म से लेकर विवाह व गमन, सीताहरण आदि की बातें वृक्ष पर से ही कहीं और अन्त में बतलाया कि 'मैं उन्हीं के भेजने से यहां आया हूं।' हनुमान की यह अमृतमयी वाणी सुनकर सीता को बड़ा सन्तोष हुआ, परन्तु दूसरे ही क्षण एक आशंका से उनका हृदय सिहर भी उठा। उन्होंने सोचा कहीं यह भी राक्षसी माया न हो। हनुमान ने सीता का भाव ताड़ लिया। उन्होंने कहा—'माता! मैं करुणानिधान के चरणों की शपथ लेकर कहता हूं कि मैं भगवान्

राम का सेवक हूं। उन्होंने आपके विश्वास के लिए मुझे एक अंतरंग कथा बताई है। जब आप वन में उनके साथ थीं और जयन्त ने कौए का वेष धारण करके आप पर आक्रमण किया था तब भगवान ने उस पर इसीकास्त्र का प्रयोग किया और उसे त्रिलोकी में कहीं शरण नहीं मिली। आपकी अंगूठी जिसे केवट को देने के लिए आपने उन्हें दी थी और भगवान ने जिसे अपनी अंगुली में धारण कर रखा था, उसे भी भगवान ने आपके विश्वास के लिए मुझे दिया है। आप मेरा विश्वास करें, मैं आपके चरण छूता हूं।'

हनुमान का हृदय वास्तव में निश्छल था और उन्होंने सच्चा प्रमाण भी दे दिया, इसलिए सीता को विश्वास हो गया। उन्होंने हनुमान को नीचे बुलाया तथा अंगूठी लेकर वे आनन्द मग्न हो गयीं। उन्हें भगवान का संदेश पाकर इतना आनंद हुआ, मानो स्वयं प्राणप्रिय भगवान ही मिल गए हों। उन्होंने हनुमान से कहा—'हनुमान ! आज तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। यदि मैं यह समझकर कि भगवान मुझे भूल गए अथवा उनका कोई अनिष्ट हो गया, मर जाती तो यह बात सुनकर उन्हें कितना कष्ट होता। मेरे कारण वे दुखी होते। हनुमान ! क्या वे

कभी मेरा स्मरण करते हैं ? क्या मैं उन्हें कभी देख पाऊँगी ? क्या वे शीघ्र ही मेरा उद्धार करेंगे ?' कहते कहते सीता का गला भर आया, आँखों में आँसू आ गए, वे बोल न सकीं। हनुमान ने कहा—'माता ! तुम इतना दुखी क्यों हो रही हो ? राम तुम्हारे लिए कितने दुखी हैं इसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। वे पृथ्वी को देखकर कहते हैं कि मां पृथ्वी ! मेरे कारण तुम्हारी प्यारी पुत्री को बड़ा कष्ट हुआ है। क्या इसी से तुम मुझ पर नाराज हो ! वे खिले हुए फूलों और कलियों को देखकर कह उठते हैं कि लक्ष्मण ! इन्हें चुन लाओ, मैं सीता के बालों में गूँथूंगा। माता ! उनकी विरह कथा अवर्णनीय है। वे अपने को भूल जाते हैं और सदा तुम्हारी ही याद किया करते हैं।

हनुमान ने पुनः कहा—'माता ! उन्होंने आपको सम्बोधित करके कहा है प्रिये ! तुम्हारी उपस्थिति में जो वस्तुएं मेरे लिए सुखकर थीं, वे ही आज दुखकर हो रही हैं। सुन्दर सुन्दर वृक्षों की नयी नयी कोपलें आज मुझे आग सी जान पड़ती हैं। चन्द्रमा ग्रीष्म ऋतु के सूर्य की भांति जलाता है और बादलों की नन्हीं नन्हीं बूंदें जो पहले अमृत के समान जान पड़ती

थीं, अब जलते हुए तेल सी मालूम पड़ती हैं। शीतल मंद, सुगंध वायु विषैले सांपों की सांसों के समान मुझे पीड़ा पहुंचाता है। यदि मैं अपना यह उद्वेग यह आवेश किसी पर प्रकट कर पाता तो मेरा हृदय कुछ हल्का हो जाता। परन्तु किससे कहूं, क्या कहूं! कोई समझें भी तो! हम दोनों का जो पारस्परिक प्रेम है, एक दूसरे की आत्मा का संयोग है, मिलन है, उसका रहस्य केवल मेरा हृदय, मेरी आत्मा ही जानती है और मेरा हृदय, मेरी आत्मा सदा तुम्हारे पास ही रहती है, एक क्षण के लिए भी तुमसे बिछुड़ती नहीं। तुमसे अलग होती नहीं। क्या इतने से हमारे अनिर्वचनीय प्रेम की व्याख्या हो जाती है। मैं तो कहूंगा, कदापि नहीं, परन्तु और कहा भी क्या जा सकता है ?

यह कहते समय हनुमान भावाविष्ट हो गए थे। सीता को ऐसा मालूम हुआ मानो स्वयं राम उनके सामने खड़े होकर बोल रहे हैं। वे प्रेम मग्न हो गयीं शरीर की सुधि भूल गयीं। हनुमान ने उन्हें धैर्य बंधाते हुए कहा - 'माता! भगवान के प्रभाव, ऐश्वर्य और बल की ओर देखो। उनके बाणों के सामने ये तुच्छ राक्षस एक क्षण भी नहीं ठहर सकते। समझ लो कि

ये मर गए। भगवान को अब तक आपका पता नहीं मिला था, नहीं तो वे न जाने कब राक्षसों का संहार करके तुम्हें ले गए होते। हम सब वानर भालू उनके साथ आयेंगे और निशिचरों को पछाड़-पछाड़कर मारेंगे और आपको लेकर आनंद मनाते हुए अयोध्या चलेंगे।

'माता ! आप क्या प्रभु का प्रभाव भूल गयीं ? वे मालूम होते ही वहां से सैनिकों के साथ चल पड़ेंगे, बाणों से समुद्र को स्तम्भित कर देंगे, लंका में एक भी राक्षस नहीं बचेगा। यदि देवता, दानव और स्वयं मृत्यु भी भगवान राम के मार्ग में विघ्न डालना चाहेंगे तो वे उन्हें भी नष्ट कर देंगे। माता मैं शपथ, पूर्वक कहता हूं, तुम्हारे वियोग से राम जितने व्यथित हैं, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वे एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करेंगे। आप उन्हें शीघ्र ही सकुशल देखेंगी।' सीता ने कहा—'हनुमान ! अब तक दस महीने बीत गए, अब दो ही महीने बाकी हैं, यदि इनके बीच में ही भगवान ने मेरा उद्धार नहीं किया तो मैं उनके दर्शन से वंचित ही रह जाऊंगी। मैं उनके दर्शन की आशा से ही जीवित हूं। रावण ने अब तक मुझे मार डाला होता, यदि विभीषण ने अनुनय विनय

करके मेरी रक्षा न की होती।' सीता हनुमान से ये बातें कहते-कहते व्याकुल हो गई, उनका गला सूख गया, वे बोल न सकीं।

## हनुमान का रौद्र रूप

हनुमान ने कहा—'माता! मैंने कहा न कि भगवान मेरी बात सुनते ही चल पड़ेंगे। परन्तु उनके आने की क्या आवश्यकता है। मैं आज ही आपको इस दुःख से मुक्त करता हूं। आप मेरी पीठ पर चढ़ जाइये, मैं आपको पीठ पर लेकर समुद्र लाँघ जाऊंगा। जैसे अग्नि हवन किये हुए हविष्य को तत्काल इन्द्र के पास पहुंचा देता है, वैसे ही मैं आपको तत्काल प्रवर्षण गिरि पर विराजमान भगवान राम के पास पहुँचाये देता हूं। भगवान की कृपा से न केवल आपको, बल्कि रावण के साथ सारी लंका को मैं ढोकर ले जा सकता हूं। अब देर मत कीजिए। जब मैं आपको लेकर चलूंगा तब कोई भी राक्षस मेरा पीछा न कर सकेगा।' हनुमान की बात सुनकर सीता को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा—तुम्हारा शरीर बहुत छोटा है, तुम मुझे ले चलने का साहस कैसे कर रहे

हो ?' हनुमान ने सीता को अपना विराट रौद्र रूप दिखलाया। वे बढ़कर सुमेरु पर्वत के समान हो गए। उन्होंने सीता से कहा—देवि ! अब देर मत करो। कहो तो राक्षसों के साथ लंका को ले चलूं ? कहो तो राक्षसों को मारकर लंका को ले चलूं ? निश्चय कर लो और चलकर राम लक्ष्मण को सुखी करो।'

जानकी ने कहा—हनुमान ! मैं तुम्हारी शक्ति, तुम्हारा बल जान गयी। तुम वायु और अग्नि के समान प्रतापशाली हो। तुम मुझे ले चल सकते हो। परन्तु तुम्हारे साथ मेरा जाना ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे तीव्र वेग से मूर्छित हो सकती हूं। तुम पर से गिर सकती हूं। राक्षसों से तुम्हें बड़ी लड़ाई करनी पड़ेगी और मेरे पीठ पर रहने से तुम्हें बड़ी आपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। युद्ध की बात है पता नहीं, तुम जीतोगे या वे जीतेंगे। तुम जीत भी सकते हो, परन्तु इससे भगवान का यश नहीं बढ़ता। मेरे इस प्रकार जाने से बहुत लोग सोचेंगे कि हनुमान अपनी पीठ पर किसको लिए जा रहे हैं। एक ही क्षण के लिए सही, उन्हें हमारे चरित्र पर शंका हो सकती है। सीता ने और भी बहुत से कारण बतलाते हुए कहा—'पतिभक्ति की दृष्टि से मैं स्वेच्छापूर्वक तुम्हारे

शरीर का स्पर्श नहीं कर सकती। रावण ने मेरा शरीर छू लिया था, वह तो विवशता की बात थी, मैं असमर्थ थी, क्या करती ? जब राम यहाँ आकर राक्षसों के साथ रावण को मारेंगे तब मैं उनके साथ चलूंगी और यही उनके योग्य होगा।' हनुमान ने सीता की बातों का सम्मान किया। उनकी प्रशंसा की। सीता ने कहा--'बेटा ! तुम्हारी भक्ति भगवान पर विश्वास और तुम्हारा बल पौरुष देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ है। मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं कि तुम बड़े ही बलवान, शीलवान, अजर अमर और गुणी होओ। भगवान सर्वदा तुम पर स्नेह रखें।'

'भगवान सर्वदा स्नेह रखेंगे।' यह सुनकर हनुमान पुलकित हो गए। उन्हें और चाहिए ही क्या ? जीवन का परम लाभ तो यही है। उन्होंने माता के आशी. र्वाद को अमोघ कहकर कृतकृत्यता प्रकट की।

माता दर्शन हो जाने के बाद हनुमान ने सोचा कि अब तो श्रीराम का रावण से युद्ध होना निश्चित है, परन्तु इसका किला इतना मजबूत है, इसकी चारदीवारियां इतनी सुरक्षित हैं, इसके दरवाजों पर ऐसे ऐसे यंत्र लगे हैं कि सहज में इसे जीतना सम्भव नहीं है। इन्हें तोड़े बिना हमारे आक्रमण का मार्ग

नहीं खुल सकता। परन्तु इन्हें तोड़ा कैसे जाय, यह एक प्रश्न है। अच्छा ! मैं तो वानर हूं न। मैं फल तोड़कर खा सकता हूं, क्योंकि अब भगवान का काम हो चुका है। मैं वृक्षों के कुछ डाल पात तोड़ सकता हूं, क्योंकि इन दुष्टों को उत्तेजित करने का यही एक मार्ग है। हनुमान ने निश्चय कर लिया, उनकी बुद्धि और बल देखकर माता ने भी अनुमति दे दी।

## लंका विध्वंस

बाग के अनेकों वृक्ष नष्ट हो गए। बागवान खदेड़ दिए गए हजारों राक्षस धूल में मिला दिए गए। एक घूंसे से ही अक्षायकुमार की हड्डी पसली चूर-२ हो गयी। सारी लंका में तहलका मच गया। रावण पहले तो स्वयं ही युद्ध करने के लिए आ रहा था, परन्तु मेघनाद ने उसे रोक दिया। वह आया, हनुमान के प्रहारों से उसके प्राणों के लाले पड़ गए। उसने घबराकर ब्रह्मपाश का प्रयोग किया। यद्यपि ब्रह्मा के वरदान से हनुमान ब्रह्मपाश से मुक्त थे तथापि उन्होंने सोचा कि ब्रह्मपाश का अपमान नहीं करना चाहिए और रावण की सभा में चलकर भगवान की महिमा सुनानी चाहिए, जिससे राक्षस भयभीत हो जाएं। वे स्वयं ही ब्रह्मपाश में बंध गए।

## हनुमान रावण की सभा में

मेघनाद बड़ी प्रसन्नता से उन्हें राज्यसभा में ले गया। वहां जाते-जाते यह बंधन उनके शरीर से छूटकर गिर चुका था। हनुमान ने देखा कि रावण की सभा में बड़े-२ देवता लोकपाल दिक्पाल हाथ जोड़े खड़े हैं। सूर्य का प्रकाश मंद है, वायु पंखा झल रहा है और अग्निदेव आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सब रावण के इशारे का इन्तजार कर रहे हैं। हनुमान निश्शंक खड़े थे। रावण ने उन्हें इस प्रकार अविनीत देखकर न जाने क्या सोचा और वह ठहाका मारकर हंसने लगा, परन्तु दूसरे ही क्षण उसे अपने पुत्र अक्षयकुमार की याद आ गयी। उसने डांटकर कहा—'तू कौन है, किसके बल पर तैने ऐसा उत्पात मचा रक्खा है, क्या तू मुझे नहीं जानता? मैं अभी तुझसे समझता हूं।' हनुमान ने बड़े ही गम्भीर स्वर से कहा—'रावण! जो सम्पूर्ण प्रकृति के आश्रय हैं, जिनके रोम-रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड प्रतिक्षण पैदा होते और नष्ट होते रहते हैं जिनकी शक्ति से ब्रह्मा, विष्णु, महेश अपना-अपना काम करते हैं, जिनकी कृपा लेश से शेषनाग पृथ्वी को धारण करने में समर्थ होते हैं, जो तुम्हारे जैसे राक्षसों को दण्ड देने के लिए ही अवतीर्ण

हुए हैं, मैं उन भगवान राम का दूत हूँ। क्या तुम उन्हें नहीं जानते ? जनक के धनुषयज्ञ में जो धनुष तुमसे हिल तक न सका था, उसे तिनके की भाँति तोड़ देने वाले को तुम भूल गए हो ? खर, दूषण, त्रिशरा को चौदह हजार सेना के साथ अकेले मारने वाले को तुम नहीं जानते ? तुम्हें अपनी कांख में दबा कर रखने वाले बालि को जिन्होंने एक ही बाण में मार डाला, उनको तुम नहीं जानते ? रावण ! तुम उन्हें भूल सकते हो, परन्तु वे तुम्हें नहीं भूल सकते। जिनकी अनुपस्थिति में भेष बदलकर, धोखा देकर, जिनकी धर्मपत्नी को तुम चुरा लाए हो, उन्हें भूलकर भी तुम बच नहीं सकते। मैं उन्हीं का दूत हूं, मुझे अच्छी तरह पहचान लो। अब देर नहीं है, उनके बाणों से लंका वीरान हो जायेगी, इन तुम्हारे सभासदों का नामनिशान तक न रहेगा।'

हनुमान की निर्भीक वाणी सुनकर राक्षस कांपने लगे। उनके मन में वह भय बैठ गया, जिसके कारण वे युद्ध में भी वीरता के साथ राम का सामना नहीं कर सके। देवता लोग मन-ही-मन प्रसन्न हो गए। रावण ने हनुमान की बात की उपेक्षा कर दी। हनुमान ने पुनः कहा—'भूख लगने पर फल खाकर मैंने कोई

अपराध नहीं किया है। पेड़ पत्ता तोड़ना तो मेरा स्वभाव ही है। जिन दुष्टों ने मुझे मारा है, उनसे आत्मरक्षा करने के लिए मैंने भी प्रहार किया है। ज्यादती तो तुम्हारे पुत्रों की ही है, जिन्होंने मुझे बन्दी बनाने की चेष्टा की है, परन्तु मैं उन्हें क्षमा करता हूं। तुम मेरी एक बात सुनो, बस एक बात मान लो। मैं विनय से कहता हूं, प्रेम से कहता हूं। और सच्चे हृदय से तुम्हारे हित के लिए कहता हूं। भाई रावण ! जो काल सारी दुनिया को निगल जाता है, वह उनसे भयभीत रहता है, वह उनके आधीन रहता है। उनसे वैर करके तुम बच नहीं सकते। तुम जानकी को ले चलो, परम कृपालु भगवान तुम्हें क्षमा कर देंगे, वे शरणागत के सब अपराध भूल जाते हैं। तुम उनके चरणों का ध्यान करो और लंका का निष्कण्टक राज्य भोगो। तुम बड़े कुलीन हो, तुम्हारे पास अतुल सम्पत्ति है, तुम बड़े ही विद्वान हो और बल भी तुम्हारे पास पर्याप्त है, उन्हें पाकर अभिमान मत करो, ये चार दिन की चांदनी है। चलो, भगवान की शरण होओ। मैं तुमसे सत्य कहता हूं, शपथपूर्वक कहता हूं कि राम से विमुख होने पर तुम्हारी कोई रक्षा नहीं कर सकता।' इसलिए—

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघनायक कृपा सिंधु भगवान ।।

## लंका दहन

यद्यपि हनुमान ने बहुत ही हितकारी बातें कहीं परन्तु वे रावण को अच्छी नहीं लगीं । उसने खीझकर राक्षसों को आज्ञा दी कि इसे मार डालो । विभीषण ने आपत्ति की कि दूत को मारना अन्याय है । अंत में अंग भंग करना निश्चय रहा और रावण ने पूंछ जला देने की आज्ञा दी । पूंछ में कपड़े लपेटे जाने लगें । उसे तेल में भिगोया गया और आग लगा दी गयी । दस-बीस राक्षस उन्हें पकड़कर नगर में घुमाने लगे, बच्चे ताली पीट-पीटकर हंसने लगे । हनुमान ने लंका ध्वंस करने का यही अवसर उपयुक्त समझा । उन्होंने अपनी पूंछ से एक झटका लगाया और सारे राक्षस अपने-अपने प्राण बचाकर भाग गए । वे उछल कर एक महल से दूसरे महल पर जाकर सबको भस्म करने लगे । वायु ने सहायता की । अग्नि ने अपने मित्र वायु के पुत्र के कार्य में हाथ बंटाया, लंका धह-धह करके जलने लगी । बहुत से यंत्र नष्ट कर दिए । धोखा देने के स्थान भस्म कर दिये । परन्तु सोने की लंका अब तक जली नहीं । यद्यपि सारे नगर में

हाहाकार मचा हुआ था, सब अपनी-अपनी सामग्री, बाल बच्चे और स्त्री, वृद्धों को लेकर अलग भाग रहे थे तथापि लंका जलने के समय भी चमक रही थी।

कहते हैं कि लंका की एक काल कोठरी में शनि देवता कैद थे। हनुमान का पैर उसको चहार दीवारी पर लगा और वह टूट गयी। शनिश्चर ने हनुमान से पूछकर सारी बात जान ली और एक कनखी से लंका की ओर देखा। एक विभीषण का घर छोड़कर सारी लंका जलकर राख की ढेरी हो गयी। उन्होंने हनुमान को वरदान दिया और बतलाया कि अब लंका का सत्यानाश निकट है, वे चले गये। शनिश्चर देवता को मुक्त करके हनुमान ने जब देखा कि सारी लंका ध्वस्त हो गयी, इसके बीहड़ मोर्चों में अब कोई खतरनाक बात न रही, तब समुद्र में कूद पड़े और स्नान करके फिर माँ सीता के पास आये। माँ सीता ने भगवान के लिए उन्हें चूड़ामणि दिया और शीघ्र से शीघ्र अपने उद्धार की प्रार्थना करने के लिए कहा। उन्हें प्रणाम करके घोर गर्जना करते हुए हनुमान ने यात्रा की।

जाम्बवान, अंगद आदि बिना कुछ खाये-पीये एक पैर से खड़े रहकर हनुमान की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उनकी किलकारी सुनते ही सबने कार्यसिद्धि का अनुमान कर लिया और आगे बढ़कर उन्हें गले लगाया। खाते पीते मधुवन उजाड़ते हुए सब भगवान राम के पास पहुंचे। हनुमान ने बड़े ही करुण शब्दों में सीता की दशा का वर्णन किया। लंका के ऐश्वर्य, रावण की शक्ति और वहाँ की एक एक बात उन्होंने भगवान से बतायी। भगवान ने कहा—'हनुमान! तुम्हारे समान उपकारी संसार में और कोई नहीं है। मैं तुम्हें क्या बदला दूं, मैं तम्हारा ऋणी हूं, तम्हारे सामने मुझसे देखा नहीं जाता।' भगवान की यह बात सुनते ही हनुमान व्याकुल होकर उनके चरणों पर गिर पड़े और प्रेम मग्न हो गये। भगवान राम ने बलात् उन्हें उठाकर हृदय से लगाया और उन्हें अपनी अनन्य भक्ति का वरदान दिया। भगवान शंकर की अभिलाषा पूर्ण हुई। जिसके लिए वे हनुमान बने थे, वह कार्य पूरा हुआ।

## हनुमान और गोवर्धन पर्वत

हनुमान के जीवन में यह विशेषता है कि जो इनके सम्पर्क में आया, उसे इन्होंने किसी न किसी

प्रकार भगवान की सन्निधि में पहुंचा ही दिया। लंका में विभीषण इनसे मिले, इनके संसर्ग और आलाप से वे इतने प्रभावित हुए कि रावण की भरी सभा में उन्होंने हनुमान का पक्ष लिया और अन्त में रावण को छोड़कर वे राम की शरण में आ गये। उस समय जब सुग्रीव के विरोध करने पर भी भगवान ने शरणागत रक्षा के प्रण की घोषणा की तब इन्हें कितना आनन्द हुआ, यह कहा नहीं जा सकता। अंगद को साथ लेकर सबसे पहले हनुमान उमंग भरी छलांग मारकर विभीषण के पास चले गये और उन्हें भगवान के पास ले आये। उनका एकमात्र काम है भगवान की सेवा, भगवान की शरण में जाने वालों की सहायता।

समुद्र बन्धन हुआ, उसमें हनुमान कितने पहाड़ ले आये, उसकी गिनती नहीं की जा सकती। सेतु पूरा होते-२ भी ये उत्तर की सीमा से एक पहाड़ लिए आ रहे थे। इन्द्रप्रस्थ से कुछ दूर चलने के बाद उन्हें मालूम हुआ कि सेतु बन्धन का कार्य पूरा हो गया। उन्होंने सोचा कि अब इस पहाड़ को ले चलकर क्या होगा, वहीं रख दिया, परन्तु वह पहाड़ भी साधारण पहाड़ नहीं था, उसकी आत्मा ने प्रकट होकर हनुमान से कहा--'भक्तराज! मैंने कौन सा अपराध

किया है आपके कर कमलों का स्पर्श प्राप्त करके भी मैं भगवान की सेवा से वँचित हो रहा हूं। मुझे यहाँ मत छोड़ो, वहां ले चलकर भगवान के चरणों में रख दो, पृथ्वी पर स्थान न हो तो समुद्र में डुबा दो, भगवान के काम आऊँ तो जीवित रहना अच्छा, नहीं तो इस जीवन से क्या लाभ है ?

हनुमान ने कहा—'गिरिराज ! तुम वास्तव में गिरिराज हो। तुम्हारी यह अचल निष्ठा देखकर मेरे मन में आता है कि मैं तुम्हें ले चलूं, परन्तु भगवान की ओर से घोषणा की जा चुकी है कि अब कोई पर्वत न लावे। मैं विवश हूं। परन्तु मैं तुम्हारे लिये भगवान से प्रार्थना करूंगा, जैसी वे आज्ञा देंगे, वैसा मैं तुमसे कह दूंगा।'

हनुमान भगवान के पास गये। उन्होंने उसकी सचाई और प्रार्थना भगवान के सामने निवेदन की। भगवान ने कहा–'वह पर्वत तो मेरा परम प्रेमपात्र है। उसका तुमने उद्धार किया है। जाकर उससे कह दो कि द्वापर में मैं कृष्ण रूप में अवतार लेकर उसे अपने काम में लाऊंगा और सात दिनों तक अपनी अंगुली पर रखकर ब्रजजनों की रक्षा करूंगा।' हनुमान

ने व्रजभूमि में जाकर गोवर्धन से भगवान का सन्देश कहा। हनुमान की कृपा से गोवर्धन गिरि भगवान का परम कृपा पात्र बन गया। भगवान की नित्य लीला का परिकर हो गया।

## हनुमान को सर्वत्र राम दर्शन

सुबेल पर्वत पर भगवान पर्णशय्या पर लेटे हुए थे। सुग्रीव की गोद में उनका सिर था, अंगद हनुमान चरण दाब रहे थे, धनुष और तूणीर अगल-बगल रखे हुए थे, लक्ष्मण पीछे की ओर वीरासन से बैठकर भगवान को देख रहे थे। भगवान ने चन्द्रमा की ओर देखकर पूछा—'भाई! अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार तुम लोग बताओ कि यह चन्द्रमा में श्यामता कैसी है?' सुग्रीव, विभीषण, अंगद आदि ने अपने अपने भाव के अनुसार उसके कारण बतलाए। सब के पीछे हनुमान ने कहा—'प्रभो! चन्द्रमा आपका सेवक है। आपका भी उस पर अनन्त प्रेम है। वह आपको अपने हृदय में रखता है और आप उसके हृदय में रहते हैं। बस, आप ही चन्द्रमा के हृदय

में श्याम सुन्दर रूप से दीख रहे हैं।' भगवान हंसने लगे, सबको बड़ी प्रसन्नता हुई।

कह हनुमन्त सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति विधु उर बसति मोह स्यामता अभास ।।

हनुमान को तो सर्वत्र ही भगवान के दर्शन होते थे। चन्द्रमा में उन्होंने भगवान के दर्शन किए तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

## लक्ष्मण की प्राण रक्षा

राम और रावण का भयंकर युद्ध हुआ। हनुमान ने उसमें कितने राक्षसों का वध किया, यह रामायण प्रेमियों से छिपा नहीं है। समय-समय पर युद्ध में उन्होंने राम, लक्ष्मण, विभीषण, जाम्बवान–सभी की सहायता की। मेघनाद से युद्ध करते समय लक्ष्मण को बड़ी ही भयंकर शक्ति लग गई। वे रण भूमि में ही मूर्छित हो गए। मेघनाद और उसके समान अनेक सैनिकों ने मिलकर चेष्टा की कि लक्ष्मण को उठा ले चलें, परन्तु वे सफल न हुए, लक्ष्मण को जमीन पर से उठा न सके। हनुमान ने उन्हें अनायास ही उठा लिया और राम के पास ले आये। उन्हें मूर्छित अवस्था में देखकर राम शोकाकुल हो गए।

जाम्बवान ने बताया कि लंका में एक सुषेण नाम के वैद्य रहते हैं। यदि वे इस समय आ जायें तो लक्ष्मण स्वस्थ हो सकते हैं।

हनुमान ने लंका की यात्रा शुरू कर दी। उन्होंने सोचा कि शत्रु पक्ष का वैद्य है, शायद रात्रि में न आवे। इसलिए उनका मकान ही उखाड़ ले चलें, ऐसा ही किया। सुषेण ने रामसेना में आकर लक्ष्मण को देखा और बतलाया कि द्रोणाचल से यदि आज रात भर में औषधियां आ जायें तो लक्ष्मण जीवित हो सकते हैं! हनुमान ने भगवान का स्मरण करते हुए द्रोणाचल की यात्रा की। यह समाचार रावण को मिल गया था। उसने कालनेमि नामक दैत्य से मिलकर ऐसा षडयन्त्र रचा कि हनुमान को मार्ग में ही अधिक समय लग जाय वे कल सूर्योदय के पहले यहां न लौट सकें। कालनेमि ने ऋषियों का वेष बनाकर हनुमान को भुलावे में रखना चाहा, परन्तु माया पति के दूत पर किसकी माया चल सकती है। दैवयोग से हनुमान को पता चल गया और उन्होंने उस बनावटी ऋषिराज को मृत्यु की गुरु दक्षिणा देकर आगे की यात्रा की।

हनुमान द्रोणाचल पहुंच गये। रात का समय था।

वे औषधियों को नहीं पहचान सके। शायद औषधियों ने अपने को छिपा लिया। हनुमान विलम्ब करना तो जानते ही नहीं थे, रातों रात ही उन्हें लंका पहुंचना था। उन्होंने समुचा द्रोणाचल ही उखाड़ लिया और लेकर चलते बने। लौटते समय अयोध्या उनके मार्ग में पड़ती थी। भरत ने दूर से ही देखकर अनुमान किया कि यह कोई राक्षस है। उन्होने एक हलका सा बाण चला दिया। बाण लगते ही 'राम राम' कहते हुए हनुमान मूर्च्छित होकर गिर पड़े। उनके मुँह से 'राम राम' सुनकर भरत उनके पास दौड़े गए और बड़ी चेष्टा करके उन्हें जगाने लगे। अन्त में उन्होंने कहा–यदि मेरे हृदय में राम की सच्ची भक्ति हो तो यह वानर अभी जीवित हो जाय।' हनुमान उठकर बैठ गए। हनुमान ने सारी कथा सुनाई। भरत ने पछताकर अपनी बड़ी निंदा की और हनुमान को बाण पर बैठकर जाने के लिए कहा। हनुमान ने बड़ी नम्रता से अस्वीकार किया और वे द्रोणाचल लेकर लंका पहुँच गए। उस समय श्रीराम बहुत ही व्याकुल हो रहे थे। हनुमान के आते ही उन्होने उन्हें हृदय से लगा लिया' सुषेण ने उपचार किया और लक्ष्मण स्वस्थ हो गए। चारों ओर हनुमान की कीर्ति गायी

जाने लगी। सुषेण को उनके घर सहित हनुमान यथा स्थान रख आये।

## अहिरावण का वध

रात का समय था, हनुमान पहरा दे रहे थे। अहिरावण विभीषण का बेष बना के आया। हनुमान ने उसे बुलाया और पूछा कि 'भाई ! इतनी रात को कहाँ से आ रहे हो ?' उसने कहा—'भगवान की आज्ञा से संध्या करने गया था, आने में देर हो गयी, उन्होंने मुझे शीघ्र बुलाया है।' सबके सो जाने पर अहिरावण राम और लक्ष्मण को काँधे पर ले भागा। भगवान को भला कोई क्या हर सकता है ? लक्ष्मण तो कभी सोते ही नहीं परन्तु जब प्रभु को अपने भक्त की महिमा प्रकट करनी होती है, तो वे साधारण मनुष्यों की भांति ही लीला करते हैं। आज हनुमान की महिमा प्रकट करनी होती है, तो वे चुपचाप अहिरावण के कंधे पर चले गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल सारी सेना में बड़ा कोलाहल मचा। सुग्रीव, जाम्बवान, विभीषण सब-के-सब व्याकुल थे। हनुमान ने वह घटना सुनायी। विभीषण ने कहा—'यह अहिरावण की माया है।

मेरा वेष और कोई नहीं बना सकता।' हनुमान ने कहा 'वह चाहे जितना बली हो, चाहे कितने गुप्त स्थानों में रहता हो, मैं उसके पास जाऊंगा और उसका वध करके अपने प्रभु को ले आऊँगा।' हनुमान ने यात्रा की। दैवयोग से मार्ग में कुछ ऐसी घटना घटी कि अहिरावण उन्हें नागलोक में लेगया है, यह बात निश्चय रूप से मालूम हो गयी। वहां जाकर हनुमान ने महल में प्रवेश करने की चेष्टा की, परतु मकरध्वज ने रोक दिया। उसने कहा–'तुम कौन हो जी! जानते नहीं मैं महावीर हनुमान का पुत्र हूं! चोरी से जाना चाहोगे तो तुम्हें लोहे के चना चबा दूँगा।' यह सुनकर हनुमान चकित हो गए। उन्होंने कहा–'भैया मेरा पुत्र कोई है नहीं, तुम कहां से टपक पड़े?' मकरध्वज ने कहा–'जब आप लंका जलाकर समुद्र में स्नान कर रहे थे तब एक मछली आपका पसीना पी गयी थी। उसके गर्भ से मैं पैदा हूं। हनुमान ने उससे राम-लक्ष्मण का पता पूछा। उसने कहा–'मैं यह तो कुछ जानता नहीं, आज मेरे स्वामी किसी की बलि दे रहे हैं। वहां किसी को जाने की आज्ञा नहीं है। मैं आपको भी नहीं जाने दूंगा।'

युद्ध हुआ, एक से बढ़कर एक! अन्त में हनुमान

ने उसे उसकी ही पूंछ से बांध दिया और मंदिर में घुस गये। उनके चरणों का स्पर्श होते ही देवी जमीन में धंस गयी और वे मुंह बाकर देवी के स्थान पर खड़े हो गये। राक्षसों ने समझा कि देवी प्रसन्न होकर प्रकट हुई है, खूब पूजा की गयी, आज की देवी जी जो कुछ फूल माला, अन्न, वस्त्र आता उसे मुंह में ही रखने लगी। बलिदान के समय पर राम और लक्ष्मण लाये गये। उस समय राक्षस उनसे अनेकों प्रकार के विनोद करते, उन्हें भांति-भांति से तंग करते। वे चुपचाप सहते, चूँ तक भी नहीं करते। अहिरावण ने कहा–'अब तुम लोग अपने रक्षक का स्मरण करो।' भगवान ने कहा—'देखो कहीं तुम्हारी देवी तुम्हें ही न खा जाय।' वह इन पर तलवार चलाने ही वाला था कि हनुमान गर्जना करके भगवान के पास पहुंच गये और इन्हें अपने दोनों कंधों पर बैठाकर उन्होंने अहिरावण के हाथ से खड्ग छीन लिया। अहिरावण और राक्षसों का संहार करके हनुमान भगवान को शिविर पर ले आये। हनुमान के जय-जयकार से दिशाएं गूँज उठीं।

हनुमान निरंतर राम के काम में ही लगे रहते। अब भी लगे ही रहते हैं, परंतु यह बात युद्ध के समय

की है। दिन भर कभी भगवान के पास और कभी दूर रहकर युद्ध किया करते और रात में भगवान के चरण दबाते। उनसे धर्म की, प्रेम की, ज्ञान की, बातें सुनते। कभी-कभी क्या प्रायः ही भगवान उनके शरीर पर अपने कर-कमल फेर देते और उनकी सब थकावट मिट जाती। जब भगवान राम सो जाते तब वे अपने लम्बे लंगूर की चहारदीवारी बनाकर दरवाजे पर बैठ जाते और रात भर पहरा देते और पुनः प्रातः काल होते न होते युद्ध। कोई कठिन काम आ पड़ता तो जाम्बवान, सुग्रीव, अंगद सभी हनुमान की शरण लेते।

रावण से युद्ध करते समय हनुमान ने उसको एक ऐसा घूंसा जमाया कि वह मूर्च्छित हो गया। उसने होश में आकर हनुमान की भूरि-भूरि प्रशंसा की और स्वीकार किया कि जीवन भर में ऐसे वीर से कभी मेरा पाला नहीं पड़ा था। बात यह थी कि रावण के प्रहार से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे, अपने पुत्र मेघनाद की भाँति रावण ने भी चाहा था कि मैं इन्हें उठा ले चलूं। उसने सारी शक्ति लगा दी पर लक्ष्मण न उठे, न उठें। यह देखकर हनुमान दौड़े, रावण के बाणों से सारा शरीर छिद जाने पर भी वे लक्ष्मण के

पास पहुंच गए और रावण को एक घूंसा जमाया। वे लक्ष्मण को फूल के समान उठाकर राम के पास ले आए। राम ने हनुमान का आलिंगन करते हुए कहा—'भैया ! तुम तो काल के भी महा काल हो। देवताओं की रक्षा के लिए अवतीर्ण हुए हो, फिर मूर्च्छा कैसी ?' राम की बात सुनते ही लक्ष्मण उठ बैठे और फिर दूने उत्साह से रणभूमि में गए। हनुमान के सत्साहस से इतना बड़ा संकट क्षण भर में टल गया।

## हनुमान को उपहार

राम विजय हुए अब सीता के पास विजय का संदेश लेकर कौन जाय ? भगवान ने हनुमान को बुलाकर कहा–'हनुमान ! सीता तुमसे बड़ा स्नेह रखती हैं। अब यह विजय-समाचार सुनाने के लिए तुम्हीं उनके पास जाओ। महाराज विभीषण से आज्ञा लेकर लंका में प्रवेश करना और मेरी सुग्रीव और लक्ष्मण की कुशल कहना तथा रावण के वध की बात भी कहना। सीता जैसे प्रसन्न हों, वैसी ही बात उनसे कहना !' हनुमान ने लंका में प्रवेश किया। लंका वासी राक्षसों ने उनका सम्मान किया। विभीषण की आज्ञा तो प्राप्त थी ही। वे अशोक वन में शीशम के

पेड़ के नीचे बैठी हुई सीता जी के पास पहुंच गए। चरणों में साष्टांग दण्डवत करके उन्होंने सारा वृत्तान्त निवेदन किया। सीता एक क्षण तक कुछ बोल न सकीं, उनका कण्ठ हर्ष गद्‌गद् हो गया। उनकी आंखों में आंसू भर आए। सीता ने कहा—'बेटा ! मैं यह हर्ष-समाचार सुनकर कुछ बोल न सकी, इसे अन्यथा मत समझना। इससे बढ़कर मेरे लिए सुखद संवाद और कोई हो ही नहीं सकता। मैं सोच रही हूं कि इसके बदले तुम्हें क्या दूँ ? क्योंकि आनन्द की बात सुनाने वालों को कुछ न कुछ देने की प्रथा है। परन्तु यदि मैं तुम्हें त्रिलोकी की सम्पूर्ण संपत्ति, समस्त ऐश्वर्य दे दूं, तो भी मुझे संतोष नहीं होगा। तुम्हारे हृदय में सर्वदा भगवान की अनन्य भक्ति बनी रहे और मैं तुम्हारी ऋणी हो रहूं। सब सद्‌गुणों का तुम्हारे मन में निवास हो और रघुनाथ जी की तुम पर सदा कृपा बनी रहे।'

हनुमान ने अंजली बाँधकर कहा—'माता ! तुम्हारे अतिरिक्त और कौन है जो ऐसी स्नेहपूर्ण बातें कहे ? मेरे हृदय में युगल सरकार की स्मृति बनी रहे, मैं कर कमलों की छत्र छाया में रहूं, इससे बढ़कर और है ही क्या जो आप मुझे देंगी। आप आज्ञा करें कि

मैं आपकी क्या सेवा करूं ?' सीता ने कहा—'मैं भगवान के दर्शन के लिए बहुत ही उत्सुक हूं। अब एक क्षण भी विलंब नहीं सहा जाता।' हनुमान ने तुरन्त वहां से यात्रा की और भगवान के पास पहुंच गए। उन्होंने सीता की प्रसन्नता, उनकी दर्शनोत्कण्ठा और प्रार्थना भगवान को सुनायी। भगवान ने विभीषण को आज्ञा दी कि 'सीता को ले आओ।'

## हनुमान भरत मिलन

भगवान राम सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण आदि के साथ पुष्पक विमान पर चढ़कर अयोध्या के लिए लौटे। प्रयाग में उन्होंने हनुमान को बुलाकर कहा—'हनुमान! तुम अयोध्या में जाकर देखो कि भरत क्या कर रहे हैं। मेरे वियोग में उन्हें एक-एक क्षण भी कल्प के समान जान पड़ता होगा। उन्हें मेरा समाचार सुनाना और उनका समाचार लेकर शीघ्र ही मेरे पास आ जाना।' हनुमान ने प्रस्थान किया। अयोध्या में भगवान के लिए भरत कितने व्याकुल हो रहे थे, इसका अनुमान कोई भी नहीं कर सकता। हनुमान ने उनकी दशा देखी, वे जटा का मुकुट बांधे

कुश के आसन पर बैठे हुए थे, उनका शरीर सूखकर कांटा हो गया था, आँखों से आंसू बह रहे थे और मुंह से निरन्तर राम नाम का उच्चारण हो रहा था। वे इतने तन्मय थे कि उन्हें पता भी नहीं चला कि यहां कोई आया हुआ है। हनुमान ने स्वयं ही उनका ध्यान भंग करते हुए कहा—'जिनके विरह में आप दुखी हो रहे हैं, जिनके नाम और गुणों की रटना कर रहे हैं, वे ही भगवान राम, वे ही देवता और मुनियों के रक्षक, मां जानकी तथा लक्ष्मण के साथ सकुशल आ रहे हैं।' हनुमान के वचन सुनते ही भरत के शरीर में नवीन प्राणों का संचार हो गया। उनका रोम-रोम, उनका रग-रग अमृत से सराबोर हो गया, उन्होंने झट उठकर हनुमान को अपने गले से लगा लिया, परिचय जानने पर तो उनके आनन्द की सीमा न रही। उन्होंने बार-बार भगवान राम की बातें पूछीं और हनुमान ने भी कई बार कहीं। दोनों को अनन्त आनन्द का अनुभव हो रहा था।

भरत ने कहा—'भाई ! तुम्हें मैं क्या दूं, इसके बदले में देने योग्य और कौन सी वस्तु है ? तुम्हारा ऋणी रहने में ही मुझे प्रसन्नता है।' हनुमान उनके चरणों पर गिर पड़े और उनके प्रेम की भूरि-भूरि

प्रशंसा करके बतलाया कि 'भगवान राम प्रायः ही आपकी चर्चा किया करते हैं। आपके सद्‌गुणों का बखान किया करते हैं, आपके नाम का जप करते हैं।' भरत से अनुमति लेकर हनुमान वहां से विदा हुए।

## हनुमान का वक्ष फाड़कर दिखलाना।

भगवान का राज्याभिषेक हुआ। सभी को उपहार दिए गए। स्वयं भगवान राम ने अपने हाथों सुग्रीव, विभीषण आदि को बहुत से बहुमूल्य मणि, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि दिए। परन्तु उन्होंने न जाने क्या सोचकर हनुमान को कुछ नहीं दिया। सभी सभासद् सोच रहे थे कि भगवान ने हनुमान को क्यों भुला दिया। भगवान सब समझ-बूझ कर भी चुप थे। माता सीता भगवान की लीला का रहस्य समझ रही थीं, परन्तु औरों पर हनुमान का महत्व प्रकट करने के लिए उन्होंने एक दूसरी ही लीला रची। अपने कण्ठ से बहुमूल्य मणियों का हार निकालकर उन्होंने हनुमान को पहना दिया। सब लोग माता की प्रशंसा करने लगे। हनुमान ने भी बड़े प्रेम से उसे स्वीकार किया। परन्तु यह क्या, दूसरे ही क्षण सब लोग चकित होकर हनुमान की ओर देखने लगे।

बात यह थी कि हनुमान मणि का एक दाना उठाते और उसे तोड़ डालते। बड़े गौर से देखते और उसे फेंक देते। यह काम लगातार चल रहा था। न जाने कितने दाने तोड़े और फेंक दिए।

भगवान राम मुस्करा रहे थे। सीता कुछ गंभीर सी हो गयी थीं। भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण चकित थे। परन्तु सभासदों से नहीं रहा गया। उन्होंने कहा—'हनुमान क्या कर रहे हो? इन बहुमूल्य मणियों को इस प्रकार मिट्टी में न मिलाओ।' किसी ने दबी जबान से कहा—'आखिर हैं तो वानर ही न! इन्हें मणियों के मूल्य का क्या पता।' बहुतों को नाराज होते देखकर हनुमान ने कहा—'भाई! आप लोग क्यों नाराज हो रहे हैं? मैं तो इन मणियों का महत्व परख रहा हूं। इनमें बड़ी चमक है। ये बहुत दाम पर बिक सकती हैं, सम्भव है इन्हें दाम से कोई खरीद भी न सके, इन्हें पहनने से सौन्दर्य भी बढ़ सकता है, परन्तु क्या ये सब बातें ही महत्व की द्योतक हैं? नहीं, नहीं। मैंने महत्व की कसौटी जो कुछ समझी है वह यह है कि जिस वस्तु के हृदय में भगवान के दर्शन होते हैं, वही वस्तु महत्त्वपूर्ण है। मैं ढूंढ़ रहा था कि इन मणियों के हृदय में भगवान दीखते हैं या

नहीं ? मुझे नहीं दीखे। इनकी यह चमक दमक मुझे अन्धकारमयी मालूम हुई। इनसे मेरा क्या प्रयोजन ? ये मेरे किस काम की ? इन्हें एक-न-एक दिन टूटना ही है, छूटना ही है, मैंने इन्हें तोड़ दिया, छोड़ दिया।'

हनुमान की बात सुनकर बहुतों को तो मणियों को तोड़ने का रहस्य समझ में आ गया, परन्तु कुछ ऐसे भी थे, जिनके मन में शंका बनी हुई थी। उन्होंने पूछा—'तो क्या तुम्हारे हृदय में है ? यदि हैं तो दिखाओ और नहीं हैं तो तुमने हृदय भार क्यों ढो रक्खा है।' हनुमान ने कहा—'निश्चय ही मेरे हृदय में भगवान हैं। वैसे ही हैं, जैसे तुम सामने देख रहे हो।' उन्होंने दोनों हाथ छाती पर लगाये, हृदय चीरकर दिखा दिया कि भगवान राम माता जानकी और भाइयों के साथ उनके हृदय सिंहासन पर विराजमान हैं। सब लोग हनुमान की महिमा गाने लगे। भगवान ने सिंहासन से उठकर हनुमान का आलिंगन किया और उनके शरीर का स्पर्श होते ही हनुमान का वक्षःस्थल पहले से भी अधिक दृढ़ हो गया। भगवान ने हनुमान को उपहार क्यों नहीं दिया, इसका रहस्य अब सबकी समझ में आ गया। माता सीता मंद-मंद मुस्कराने लगीं।

## हनुमान का भोजन

हनुमान जैसा पुत्र और सीता जैसी माता ! फिर दोनों के स्नेह का क्या कहना ! हजारों दास-दासियां थीं सीता की सेवा करने के लिए, उनके इशारे से ही जो चाहतीं हो जाता, परन्तु इतने से ही उन्हें तृप्ति नहीं होती। उन्होंने अपने लाडले लाल हनुमान को अपने हाथों रसोई बनाकर खिलाने की सोची। अनेकों प्रकार के व्यंजन बनाए। हनुमान भोजन करने बैठे। माता के हाथ की रसोई कितनी मीठी होती है, हनुमान खाने लगे। उन्हें पता ही नहीं था कि मैं कितना खा गया। सारी रसोई खत्म होने पर आयी। परन्तु अभी हनुमान भोजन से विरत नहीं हुए। माता सीता हनुमान के इस कृत्य से चकित हो गयीं। उन्होंने निरुपाय होकर भगवान राम का स्मरण किया। सीता ने देखा कि हनुमान के वेष में स्वयं शंकर ही भोजन कर रहे हैं। प्रलय के समय सारे संसार को निगल जाने वाले महाकाल के भी काल हनुमान का पेट कुछ व्यंजनों से कैसे भर सकता है ? उन्होंने एक प्रकार से हनुमान की स्तुति की, किन्तु की मर्यादापूर्वक। उन्होंने हनुमान के पिछले भाग में जाकर उनके सिर पर लिख दिया—'ॐ नमः शिवाय'

और तब फिर भोजन की सामग्री दी। अब की बार हनुमान तृप्त हो गये। इस प्रकार स्वयं मां सीता ने हनुमान को शिवरूप से स्वीकार किया।

## हनुमान की चुटकी

भगवान राम की सभी सेवाएं हनुमान ही करते। वे अपने काम में इतने सावधान रहते कि दूसरों को अवसर ही नहीं मिलता। भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण भी भगवान की सेवा के लिये ललकते ही रह जाते। अन्त में उन लोगों ने एक उपाय सोचा। वह यह कि एक ऐसी दिनचर्या बनायी जाय, जिसमें भगवान की सब सेवाओं का विभाजन हो और हम लोग अपना-२ समय तथा काम निश्चित कर लें। हनुमान के लिए उसमें कोई स्थान न रक्खा जाय। योजना बनी और सर्वसम्मति से पास हो गयी। माता सीता के द्वारा वह भगवान राम के सामने उपस्थित की गयी, उसे देखकर भगवान मुस्कराये। उन्होंने हनुमान को दिखाकर पूछा—'कहो हनुमान ! तुम इस योजना को पसंद करते हो ?' हनुमान ने कहा—भगवन ! सबकी सम्मति और माता जी की सिफारिश है तो आप इसे स्वीकार कर लें, जो सेवा

कार्य इसमें न हो वह मेरा रहा। भगवान ने और लोगों से कहा—'भाई खूब सोच समझकर देख लो।' सबने देखा, कोई काम छूटा नहीं था। सबने हनुमान जी की बात मान ली। वह योजना सरकार से मंजूर हो गयी।

हनुमान ने बताया—'भगवन! दरबार को यह प्रथा है कि जब महाराज जंभाई लेने लगें, तब चुटकी बजायी जाय। सो यह काम मेरा रहा।' सबने इसे साधारण काम समझा और भगवान ने भी हंसकर उन्हें स्वीकृति दे दी। हनुमान को सेवा के सम्बन्ध में कितना सूक्ष्म ज्ञान है, भरत यह देखकर अवाक् हो गये।

अब हनुमान की बन आयी। भगवान के चलते-फिरते, खाते-सोते सर्वदा उनके साथ रहने लगे। जब भगवान कहीं चलते, तब हनुमान आगे-२ पीछे की ओर मुंह करके चलते। जब भगवान सोते तब ये थोड़ी दूर पर खड़े रहकर भगवान का मुख चन्द्र निहारते रहते। किसी किसी ने आपत्ति भी की थी, परन्तु हनुमान ने उसे यह कहकर निरुत्तर कर दिया कि प्रभु को न जाने कब जंभाई आ जाय। माता सीता को भी भगवान की सेवा में असुविधा होने

लगी। लक्ष्मण और शत्रुघ्न तो घबरा से गये। भगवान राम खूब हंसते थे। अन्ततः महारानी सीता के कहने पर भगवान ने नयी योजना बदल दी और फिर हनुमान पहले की भांति निरन्तर सेवा करने लगे।

## राम द्वारा हनुमान को उपदेश

भरत शत्रुघ्न आदि सभी को ऐसी धारणा थी और यह बात सच भी थी कि भगवान राम सबसे अधिक हनुमान पर ही स्नेह करते हैं। जब उन्हें कोई बात भगवान से पूछनी होती तब वे हनुमान के द्वारा ही पुछवाते। हनुमान स्वयं भी भगवान से और माता सीता से अनेकों प्रकार के प्रश्न पूछते और जीव, शिव आदि के सम्बन्ध में तत्वज्ञान प्राप्त करते। भगवान राम ने कई बार उन्हें तत्वज्ञान का उपदेश किया था और वेदान्तका सम्पूर्ण रहस्य समझाया था। अध्यात्म रामायण के प्राथमिक प्रसंग ऐसे ही हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में भी यह कथा आयी है कि भगवान ने श्रीकृष्णावतार में जो उपदेश अर्जुन और उद्धव को किये हैं। वे ही उपदेश श्रीरामावतार के आञ्जनेय श्रीहनुमानजी को किये हैं। हनुमान ज्ञान की मूर्ति थे। इस बात का प्रमाण कई प्रसंगों से मिलता है।

शिव ही जो ठहरे। उनके लिये यह आश्चर्य की कौन सी बात है।

कभी-२ हनुमान को बहुत सेवा करते देखकर भगवान कहते कि 'हनुमान ! तुम तो मेरे स्वरूप ही हो, तुम्हें इतनी सेवा करने की क्या आवश्यकता है ? तुम तो केवल मस्त रहा करो। हनुमान कहते— 'प्रभो ! आपका कहना सत्य है, किन्तु सेवा करने से क्या मैं आपका स्वरूप नहीं रहता ? क्या सेवा के समय मैं मस्त नहीं रहता ? शरीर दृष्टि से मैं आपका सेवक हूं। शरीर सर्वदा आपकी और आपके भक्तों की सेवा में लगा रहे, इसका यहां उपयोग है। जीव दृष्टि से आपका अंश हूं। मैं आपकी सन्निधि में रहूं, आपसे विलग न होऊं, यह सर्वथा वाञ्छनीय है। तत्त्व दृष्टि से तो मैं आपका स्वरूप ही हूं। उस दृष्टि से क्या कहना, क्या सुनना है।' भगवान हनुमान की ऐसी बात सुनकर बहुत ही प्रसन्न होते।

## हनुमान और सुबाहु

भगवान राम के अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा छोड़ा गया। शत्रुघ्न, पुष्कल, लक्ष्मी, निधि आदि बड़े बड़े वीर उसकी रक्षा के लिये नियुक्त हुए, हनुमान भी

उसके साथ थे। अनेकों स्थानों पर बड़े-२ युद्ध हुए, हनुमान ने उनमें कितनी तत्परता दिखायी, कितनी वीरता से युद्ध किया, यह बात तो पद्म पुराण के पातालखण्ड का वह अंश पढ़ने पर ही जानी जा सकती है। यहाँ केवल कुछ घटनाओं का दिग्दर्शन मात्र कराया जाता है।

चक्रांका नगरी के राजा सुबाहु से युद्ध हो रहा था। बहुत से वीर मारे गये, अनेकों घायल हुए, अंतिम युद्ध सुबाहु और हनुमान का हो रहा था। हनुमान की एक लात सुबाहु की छाती पर लगी और वे बेहोश हो गये। मूर्च्छा में सुबाहु ने देखा कि मैं अयोध्या में हूं। भगवान राम सरयू के किनारे यज्ञ कर रहे हैं और कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों के अधिपति ब्रह्मा आदि उनकी स्तुति कर रहे हैं। नारदादि ऋषि गण वीणा, पखावज आदि बजाकर उनके गुणों का कीर्तन कर रहे हैं और वे मूर्तिमान् होकर उनके यज्ञ का गायन कर रहे हैं उनकी वह श्याम सुन्दर छवि देखकर सुबाहु मुग्ध हो गये, उसी अवस्था में बहुत देर तक पड़े रहे।

जब उनकी मूर्च्छा टूटी, तब उनका अज्ञान नष्ट हो चुका था। उन्होंने एक ऋषि के शाप की कथा

सुनाकर हनुमान की बड़ी महिमा गायी और बतलाया कि इन्हीं के चरण-स्पर्श से मुझे राम तत्व का ज्ञान हुआ है, अब युद्ध बन्द कर दो और सब लोग भेंट की सामग्री लेकर अयोध्या चलें। भगवान राम के यज्ञ में सेवा कार्य करें। हनुमान आदि की पूजा करके वे लोग अयोध्या आये और हनुमान ने यज्ञीय अश्व के साथ आगे प्रस्थान किया।

## हनुमान शंकर संग्राम

जब वह घोड़ा देवपुर के शिव भक्त राजा वीर मणि के द्वारा बाँध लिया गया, तब बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। वीर मणि की भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं भगवान शंकर ने यह युद्ध किया और शत्रुघ्न, पुष्कल आदि सभी वीर मूर्च्छित एवं मृतप्राय हो गये। केवल हनुमान ही लड़ते रहे। भगवान शंकर की लीला भी वे ही अपने भक्त और भगवान दोनों की ओर से लड़ रहे थे। दोनों ही ओर शंकर, तब भला कौन हारता। हनुमान ने डांटते हुए कहा—'मैं तो जानता था कि शंकर राम के भक्त हैं; परन्तु तुम्हारी भक्ति का पता लग गया। हम लोग राम का यज्ञ पूर्ण होने के लिये घोड़े की रक्षा करते हैं और तुम उसमें विघ्न

डालने के लिए युद्ध कर रहे हो।' शंकर ने कहा—'भाई! बात तो ठीक है। मुझसे भगवान की भक्ति कहाँ बनती है? परन्तु तुम्हारी बातें बड़ी अच्छी लग रही हैं। तुमने मुझे भगवान का स्मरण तो करा दिया; परन्तु मैं क्या करूँ। वीर मणि की भक्ति से विवश हूं। मुझे उसकी ओर से लड़ना ही पड़ेगा।'

बड़ा घमासान युद्ध हुआ। हनुमान के प्रहारों से शंकर का रथ टूट गया। उनके आयुध निष्फल हो गये। उनका शरीर जर्जर हो गया। नन्दी भागने का उपक्रम करने लगा। शंकर ने हनुमान को पुकार कर कहा—'वीर! तुम धन्य हो, तुम्हारी भगवद भक्ति धन्य है। मैं तुम्हारी वीरता और भगवत्पराय-णता देखकर प्रसन्न हूं। जो वरदान यज्ञ, तप से नहीं प्राप्त हो सकते, वह मैं तुम्हें देने के लिये तैयार हूं। मांगो, मांगो, तुम्हारी जो इच्छा हो मांग लो।'

हनुमान ने कहा—'शंकर! भगवान राम की कृपा से मुझे किसी वस्तु की कामना नहीं है, तथापि आज तुम मुझसे युद्ध में प्रसन्न हुए हो, इसलिए मैं तुमसे कुछ काम लूंगा। देखो, युद्ध में पुष्कल मर गये हैं, शत्रुघ्न मूर्च्छित हो गये हैं, सैनिक क्षत-विक्षत होकर रणभूमि में पड़े हुए हैं, तुम अपने गणों के साथ

उनकी रक्षा करो। मैं औषधियाँ लाने के लिए द्रोण-चल पर जाता हूं। यदि देवता विरोध करेंगे तो सम्भव हैं वहाँ भी युद्ध करना पड़े, विलम्ब हो जाय। तब तक इन वीरों का कोई अनिष्ट न होने पावे।' शंकर ने स्वीकार किया और हनुमान ने यात्रा की।

हनुमान ने क्षीर सागर के पास जाकर द्रोणाचल को अपनी पूंछ में लपेट लिया। वे उसे उखाड़ कर वहाँ से चलने ही वाले थे कि उनके रक्षक देवताओं ने उनपर आक्रमण कर दिया, परन्तु हनुमान के सामने उनकी एक न चली, वे घायल होकर भाग गये। जब उन्होंने इन्द्र से जाकर कहा कि एक वानर द्रोणाचल को लिये जा रहा है और हमारे अस्त्र उस पर काम नहीं करते, तब वे घबड़ाकर अपने कुलगुरु वृहस्पति के पास गये। वृहस्पति ने हनुमान का पूरा परिचय बताकर उन्हें प्रसन्न करने की प्रेरणा की। इन्द्र ने कहा—'भगवान ! यदि हनुमान द्रोणाचल को उखाड़ ले जायँगे तो हमारे देवता तो मर ही जायँगे; क्योंकि वही हम लोगों का जीवनाधार है। कोई ऐसा उपाय कीजिये कि हनुमान का काम भी बन जाय और हमारी औषधियां भी सुरक्षित रहें।'

वृहस्पति इन्द्र और देवताओं को साथ लेकर

हनुमान के पास गये। उनसे बहुत रोये-गिड़गिड़ाये, अपने अपराध को क्षमा कराया और उनकी अभिलाषा पूर्ण होने का वरदान देकर उन्हें मृतसञ्जीवनी औषधि दे दी। हनुमान उसे लेकर रणभूमि में पहुंचे चारों ओर हनुमान की जयध्वनि होने लगी। वे औषधि लेकर पुष्कल के पास पहुंचे। पुष्कल मर चुका था, उन्होंने औषधि का प्रयोग करते हुए कहा—यदि मैं, मन वाणी तथा कर्म से भगवान राम को ही जानता होऊँ, उन्हीं की आज्ञा का पालन करता होऊँ और मेरी दृष्टि में उनके अतिरिक्त और कोई वस्तु न हो तो इस औषधि से पुष्कल जीवित हो जायँ। सिर धड़ से जोड़ते ही पुष्कल जी उठे और शंकर से लड़ने के लिए दौड़े।

हनुमान शत्रुघ्न के पास गये। शत्रुघ्न मूर्च्छा में 'राम-राम,' 'रघुनन्दन-रघुनन्दन' आदि बोल रहे थे और कभी-कभी उनकी लीलाओं का प्रलाप भी करते थे। [हनुमान ने औषधिका प्रयोग करते हुए–] 'यदि भगवान की कृपा से मैं नित्य ब्रह्मचारी हूं और मेरा ब्रह्मचर्य कभी भङ्ग नहीं हुआ है तो शत्रुघ्न अभी जीवित हो जायें!' शत्रुघ्न उठ बैठे और 'शिव कहां हैं, मैं अभी मार डालूंगा।' यह कहते हुए

युद्ध-भूमि की ओर दौड़े। पुनः घमासान युद्ध हुआ, वीरमणि मूर्छित हो गये; शंकर और शत्रुघ्न लड़ने लगे। जब शंकर के बाणों से शत्रुघ्न व्याकुल हो गये; तब हनुमान ने कहा कि 'अब अपने भैया की याद करो, तब काम बनेगा।' शत्रुघ्न ने वैसा ही किया और भगवान राम वहां उपस्थित हो गये, फिर तो शंकर ने बड़ी श्रद्धा भक्ति से उनकी स्तुति की और अपने इस अपराध को अमार्जनीय बतला कर क्षमा-प्रार्थना की।

भगवान राम ने कहा—'देवाधि देव महादेव ! आपने बड़ा अच्छा काम किया है। यह तो देवताओं का धर्म ही है कि वे अपने भक्तों की रक्षा करें, तुम मेरे हृदय में हो और मैं तुम्हारे हृदय में हूं, हम दो थोड़े ही हैं। जो हम दोनों में अन्तर देखते हैं, वे नरकों में जाते हैं। जो हमारे भक्त हैं, वे ही मेरे भक्त हैं। मेरे भक्त भी अत्यन्त भक्ति पूर्वक तुम्हें नमस्कार करते हैं। भगवान ने सब मरे हुए और घायल वीरों का स्पर्श करके उन्हें जीवित किया। राजा वीरमणि अपना सर्वस्व समर्पित करके राम का भक्त हो गया। हनुमान घोड़े के साथ आगे बढ़े।

———

## हनुमान को राम का वरदान

जब भगवान राम संपूर्ण वानर-भालुओं को विदा करने लगे और हनुमान की भी बारी आयी, तब वे भगवान के चरणों पर गिर पड़े। उन्होंने प्रार्थना की कि 'भगवन ! मैं आपके चरणों में ही रहूंगा।' भगवान ने स्वीकृति दे दी। ऐसे भक्तों को भला भगवान कब छोड़ते हैं ! जब भगवान की लीला के संवरण का समय आया, तब भगवान ने हनुमान को बुलाकर कहा—'हनुमान ! अब तो मैं अपने लोक में जा रहा हूं; परंतु तुम दुःख मत मानना। यह अप्रिय कार्य तुम्हें करना पड़ेगा। तुम पृथ्वी में रहकर शान्ति का, प्रेम का और ज्ञान का प्रचार करो। जब तुम मुझे स्मरण करोगे तब मैं तुम्हारे सामने प्रकट हो जाऊँगा। जहां-जहां मेरी कथा हो, मेरा कीर्तन हो, वहां-वहां तुम उपस्थित रहना, मैं तुमसे अलग थोड़े ही होता हूं। यह तो केवल मेरी एक लीला है। हनुमान ने हाथ जोड़ कहा—'प्रभो ! मैं रहूंगा, जहां-२ आपकी कथा होगी वहां-२ जाकर सुनूंगा। वह ही मेरे जीवन का आलम्बन होगा।' भगवान बहुत ही प्रसन्न हुए ! भगवान राम ने एक ऐसे ही प्रसंग पर हनुमान से कहा था—'हनुमान ! इस लोक में जब

तक मेरी कथा रहेगी, तब तक तुम्हारी कीर्ति और तुम्हारा जीवन रहेगा जब तक जगत रहेगा, तब तक मेरी कथा रहेगी। तुमने जो बड़े-बड़े मेरे उपकार किये हैं, उनमें से एक-२ के बदले में मैं अपने प्राण दे दूं तो भी तुम्हारा बदला नहीं चुका सकता। तुम्हारे उपकार का बदला मैं न दे सकूं, यह ठीक भी है। तुम्हारे जीवन में कभी ऐसा अवसर ही न आवे कि तुम्हें प्रत्युपकार की आवश्यकता हो। क्योंकि मनुष्य विपत्ति में ही प्रत्युपकार का पात्र होता है।' भगवान राम ने अपनी लीला संवरण कर ली, परन्तु उनके भक्त भगवान शंकर की लीला चालू रही। राम ते अधिक राम कर दासा।'

## महाभारत में हनुमान

भगवान राम के परमधाम पधारने के पश्चात् हनुमान का एक मात्र काम रहा भगवान के नाम, लीला और गुणों का कीर्तन एवं श्रवण। जहां-जहां सत्सङ्ग होता, वहीं हनुमान उपस्थित रहते। अर्ष्टिषेण ऋषि के साथ किंपुरुष वर्ष में रह कर प्रायः ही भगवान के गुणानुवाद सुना करते। गन्धर्वों को स्वरलहरी जब अपने रस में त्रिभुवन को उन्मत्त किये

होती, तब हनुमान उनके अमृतमय संगीत से निःसृत भगवान राम की लीला का साक्षात् अनुभव करते होते। युग-पर-युग बीत गये; परन्तु एक क्षण के लिये भी उन्हें भगवान की विस्मृति न हुई। भगवान के अतिरिक्त और कोई भी उनके सामने न आया।

वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाइसवें द्वापर में भगवान श्री कृष्ण का अवतार हुआ। श्री कृष्ण और श्रीराम एक ही हैं, दो नहीं। वे भला अपने परमप्रिय भक्त हनुमान के बिना कैसे रहते? उन्होंने हनुमान को बुलाने का संकल्प किया। परन्तु इसके साथ भी तो कुछ लीला होनी चाहिए। हनुमान की महत्ता प्रकट होनी चाहिए, अपना कहलाने वालो में जो दोष-दुर्गुण आ गये हैं; उन्हें दूर करना चाहिए। भगवान के संकल्प करते ही हनुमान द्वारिका के पास ही एक उपवन में आ विराजे। भगवान नाम का संकीर्तन करते हुए फल खाने लगे, डालियां तोड़ने लगे।

## सत्यभामा गरुड़ और चक्र का अभिमान भंग

उन दिनों सत्यभामा के लिये भगवान ने पराजित हरण किया था। उन्हें गर्व था कि भगवान का सब से अधिक प्रेम मुझ पर ही है, मैं सबसे सुन्दरी हूं।

उन्होंने बात-ही-बात में एक दिन कह भी दिया कि क्या सीता मुझसे अधिक सुन्दरी थी कि उनके लिए आप बन बन भटकते रहे ? भगवान चुप रहे। चक्र के मन में भी गर्व था कि मैंने इन्द्र के वज्र को परास्त कर दिया। गरुड़ भी सोचते थे कि मेरी ही सहायता से श्रीकृष्ण ने इन्द्र पर विजय प्राप्त की है। भगवान श्रीकृष्ण ने सोचा कि इन तीनों का गर्व नष्ट होना चाहिये। ये मेरे होकर अभिमानी रहें यह मुझे सह्य नहीं है। धन्य भागवान की कृपा।

भगवान ने गरुड़ को बुलाकर आज्ञा दी कि 'गरुड़ ! द्वारिका के उपवन में एक वानर आया है, उसे पकड़ लाओ। देखो उसे पकड़ने का तुममें साहस हो तब तो अकेले जाओ, नहीं तो सेना भी साथ ले जाओ।' गरुड़ के मन में यह बात आयी कि एक तो भगवान साधारण-सा वानर पकड़ने के लिये मुझे भेज रहे हैं, दूसरे सेना भी साथ ले जाने को कहते हैं, यह मेरा कितना बड़ा अपमान है ! मैं उस वानर को चूर-चूर कर दूंगा। गरुड़ ने अकेले जाकर देखा कि हनुमान उनकी ओर पीठ करके फल खा रहे हैं और बड़ी मस्ती से 'राम-राम' का कीर्तन कर रहे हैं। उन्होंने पहले डाँट-फटकार कर हनुमान को ले

चलने की चेष्टा की, परन्तु हनुमान टस-से-मस नहीं हुए। जब गरुड़ ने उन पर आक्रमण किया तो पहले बहुत देर तक जैसे लोग नन्ही-२ चिड़ियों से खेला करते हैं, वैसे हनुमान खेलते रहे। परन्तु जब गरुड़ न माने तब उन्होंने अपनी पूंछ में उन्हें लपेट कर तनिक सा कस किया। वे छटपटाने लगे। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण का नाम बतलाकर कहा कि उनकी आज्ञा से मैं आया हूं, उन्होंने तुम्हें बुलाया है, वे साक्षात नारायण हैं, चलो, हनुमान ने गरुड़ को छोड़ कर कहा–'भैया! यद्यपि राम और कृष्ण में कोई भेद नहीं है, दोनों एक ही है तथापि मैं तो सीतानाथ श्रीराम का हूं, मेरे हृदय में उन्हीं का पक्षपात है। मैं श्री कृष्ण के पास क्यों जाऊँ?' हनुमान ने यह कहकर मानो भगवान की लीला में सहयोग दिया।

अभी गरुड़ का गर्व टूटा नहीं था। वे सोचते थे कि अगर मैं पकड़ा न गया होता तो हनुमान को बलात् ले चल सकता। उन्होंने दुबारा आक्रमण किया। अभिमान अन्धा बना देता है। श्रीकृष्ण का दूत समझ कर हनुमान ने उनपर जोर से आघात नहीं किया, पर हल्के हाथ से पकड़ कर समुद्र की ओर फेंक दिया। समुन्द्र में गिरने पर गरुड़ को दिग्भ्रम हो गया, बहुत

देर तक वही छटपटाते रहे। जब उन्होंने भगवान का स्मरण किया तब कहीं द्वारिका का प्रकाश दीख पड़ा और वे श्रीकृष्ण के पास आये। सब बात सुनकर श्रीकृष्ण बहुत हंसे। अभी गरुड़ के मन में तेजी से उड़ने का गर्व बाकी ही था। वे सोचते थे कि उड़ने में मेरा मुकाबला वायु भी नहीं कर सकता। भले ही हनुमान बल में मुझसे बड़े हों।

भगवान ने कहा—'गरुड़ ! इस बार जाकर तुम कहो कि तुम्हारे इष्टदेव भगवान श्रीराम तुम्हें बुला रहे हैं। शीघ्र ही चलो। उन्हें अपने साथ ही ले आना। अब वे तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे, तुम्हारा बड़ा आदर करेंगे।' यद्यपि गरुड़ जाने में डरते थे, फिर भी अपनी उड़ने की शक्ति दिखाने के लिए वें गये। भगवान ने सत्यभामा से कहा कि 'सीता का रूप धारण करके आओ, हनुमान आ रहा है।' चक्र से कहा कि 'सावधानी से पहरा दो, कोई भी द्वारिका में प्रवेश करने न पावे।' सुदर्शन चक्र सावधानी से पहरा देने लगा और सत्यभामा सज धजकर अपने सौन्दर्य के गर्व में मत्त होकर आ बैठीं। भगवान श्री कृष्ण धनुष बाणधारी रामचन्द्र हो गये।

इस बार गरुड़ की हिम्मत हनुमान के पास जाने की न पड़ी। उन्होंने दूर से ही कहा कि 'भगवान श्री राम आपको शीघ्र ही बुला रहे है।' यदि मेरे साथ ही आप चल सकें तो चलें, नहीं तो मेरे कंधो पर बैठ जायें, मैं लेता चलूं।' हनुमान ने बड़ी प्रसन्नता से कहा—'अहोभाग्य! भगवान ने मुझे बुलाया है। तुम चलो मैं आता हूं।' गरुड़ ने सोचा कि ये क्या कह रहे हैं! मुझसे पीछे चलकर ये कितनी देर में पहुँचेंगे। परन्तु वे डरे हुए थे, हनुमान से फिर कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी। चुपचाप चल पड़े। सोच रहे थे कि भगवान के पास चलकर अपनी तीव्र-गति का प्रदर्शन करूँगा।

हनुमान गरुड़ से बहुत पहले द्वारिका में पहुँच गये। हनुमान की दृष्टि में वह द्वारिका नहीं थी, अयोध्या थी। फाटक पर चक्र ने अकड़कर कहा कि 'मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।' हनुमान ने कहा—'तू भगवान के दर्शन में विघ्न करता है।' और उसे पकड़ कर मुँह में डाल लिया। भगवान के महल में जाकर उन्होंने देखा कि भगवान श्रीराम सिंहासन पर विराजमान हैं। उन्हें माता सीता के दर्शन न हुए। हनुमान ने भगवान के चरणों में साष्टाङ्ग प्रणाम

करके पूछा—महाराज ! आज माताजी कहाँ हैं ? उनके स्थान पर यह कौन बैठी हैं ? आपने किस दासी को इतना आदर दे रक्खा है ?' सत्यभामा लज्जित हो गयीं। उसका सौन्दर्यमद नष्ट हो गया। भगवान ने कहा—'हनुमान !तुम्हें किसी ने रोका नहीं ? तुम यहाँ कैसे आ गये ?' हनुमान ने मुँह में से चक्र निकाल कर सामने रख दिया। चक्र श्रीहत हो गया था। जब दौड़ते हाँफते गरुड़ पहुँचे तब उन्होंने देखा कि हनुमान तो पहले से उपस्थित हैं। उनका मस्तक नत हो गया। इस प्रकार हनुमान को निमित बनाकर भगवान ने तीनों का गर्व नष्ट किया। और हनुमान को द्वारिका के पूर्व द्वार पर पुरी की रक्षा के लिए नियुक्त किया।

## हनुमान और भीम

उन दिनों पाण्डव काम्यकवन में थे। एक दिन द्रोपदी के सामने हवा में उड़ता हुआ एक बड़ा ही सुन्दर और सुगन्धियुक्त पुष्प आया। द्रोपदी ने भीम से और फूलों के लिये प्रार्थना की और वे जिस ओर से फूल आया था, उस ओर चल पड़े। भीम को अपने बल का घमंड था और वे कोई काम करने में कभी कुछ सोचते विचारते नहीं थे। हनुमान ने सोचा कि

भीम मेरा ही भाई है। उसके मन में गर्व नहीं होना चाहिये। और इस समय वह जिधर बढ़ रहा है, उधर बड़ा खतरा है, कहीं नासमझी से उसका अनिष्ट न हो जाय। हनुमान आकर रास्ते में लेट गये और अपना लंबा लंगूर फैला दिया। भीम ने हनुमान को पहचाना नहीं। उन्होंने कहा—'वानर अपनी पूंछ हटा ले नहीं तो मैं उसे तोड़ डालूँगा।' हनुमान ने अपने को पीड़ित सा बना लिया और कहा—'भाई। मेरी पूंछ बहुत बड़ी है तुम अभी जवान हो, बली हो, इसे लांघकर चले जाओ या इसे हटा दो।' भीम ने कहा—'तुम्हारी पूंछ चाहे जितनी बड़ी हो, जैसे मेरे बड़े भाई हनुमान ने समुद्र को लांघा था वैसे ही मैं तुम्हारी पूंछ लांघ जाता; परन्तु सबके शरीर में भगवान रहते हैं, इसलिए किसी को लाँगना उचित नहीं है। मैं तुम्हारी पूंछ हटा देता हूँ।' उन्होंने पहले एक हाथ लगाया, परन्तु पूंछ न हिली; दोनों हाथ लगाये, फिर भी वह जैसी की तैसी अटल रही। उनके शरीर में पसीना आ गया। वे थक गये, परन्तु पूंछ को न हटा सके। अब भीम को ध्यान आया। अभिमान टूटते ही वे हनुमान को पहचान गये। उन्होंने अपने कृत पर पश्चाताप किया, क्षमा मांगी

और हनुमान ने बड़े प्रेम से उन्हें गले लगाकर भगवान राम की कथा सुनायी। भीमसेन के बहुत आग्रह करने पर हनुमान ने अपना वह भीषण रूप दिखाया, जिससे उन्होंने समुद्र पार किया था। फिर छोटे रूप में हो गए और भीम को अनेकों-अनेकों प्रकार के उपदेश दिये। उन्होंने कहा—'अब अभिमान कभी न करना। मेरे मिलने का हाल किसी से मत कहना और आपत्ति पड़े तो मेरा स्मरण करना। कहो तो मैं हस्तिनापुर जाकर सारा नगर अभी नष्ट कर दूं और धृतराष्ट्र के पुत्रों को मार डालूँ। दुर्योधन को बांध लाऊँ। जो कहो मैं करने को तैयार हूँ।' भीमसेन ने कहा—'आपकी सहायता पाकर हम सनाथ हुए, आपकी सहायता से ही हम शत्रुओं को जीत सकेंगे।' हनुमान ने कहा, 'भीम। जब तुम शत्रुओं को सेना में घुसकर सिंहनाद करोगे तो अर्जुन की ध्वजा के ऊपर रहकर मैं भी ऐसा ही शब्द करूँगा कि तुम्हारे शत्रु उसे सुनकर मृतप्राय हो जायेंगे। हनुमान ने भीम को आलिंगन किया और वहां से अन्तर्धान हो गये। उनके बतलाये हुए मार्ग से जाकर भीम ने वह पुष्प प्राप्त किया।

## अर्जुन का गर्व भंग

हनुमान में अभिमान की तनिक भी मात्रा नहीं

है। हनुमान के जीवन में कभी अभिमान देखा ही न गया, इसी से भगवान अपने भक्तों के अभिमान को दूर करने का काम प्रायः हनुमान से ही लेते हैं। कहते हैं कि अर्जुन को भी एक बार अपने बाण बल का अभिमान हो गया था। उन्होंने बात ही बात में एक दिन श्रीकृष्ण से कहा कि 'तुमने रामअवतार में समुद्र पर पुल बाँधने के लिए इतना आयोजन क्यों किया ? बाणों से पुल बांध देते। बेचारे वानरों को झूठ-मूठ परेशान किया !' भगवान हंसने लगे, उनका हंसना ही तो लोगों को भुलावा देने वाली माया है।

भगवान ने कहा—'अच्छा तुम बाणों से समुद्र के एक छोटे से अंश पर पुल बांधो। मैं तुम्हें बताता हूं।' अर्जुन ने आनन-फानन में वैसा कर दिया।

भगवान ने हनुमान का स्मरण किया, वे तुरन्त आ पहुंचे। भगवान की आज्ञा से वे बाणों के पुल पर चढ़े। उनके चढ़ते ही पुल चरचराकर टूटने लगा, वे उस पर से उतर आये। अर्जुन ने देखा कि भगवान की पीठ पर खून लगा हुआ है। पूछने पर मालूम हुआ कि यदि भगवान अपनी पीठ लगाकर उस पुल को न रोके रखते तो वह हनुमान को लिये-लिये धंस जाता और अर्जुन की बड़ी हंसी होती। भगवान

ने कहा—'ऐसे-ऐसे अनेकों वानर थे, वे बाण के पुल पर से कैसे जाते। अर्जुन की समझ में बात आ गयी। उनका गर्व भङ्ग हो गया।

## हनुमान अर्जुन के रथ पर

अर्जुन ने भगवान की आज्ञा से हनुमान की बड़ी आराधना की, उनके मंत्रों के पुरश्चरण किये। हनुमान ने वर दिया कि, 'मैं सदा तुम्हारी सहायता करूंगा और भावी युद्ध में मैं तुम्हारे रथ पर बैठकर तुम्हारी रक्षा करूंगा।' कहते हैं कि महाभारत युद्ध में अर्जुन के बाणों से सबके रथ बहुत दूर-दूर जा गिरते थे, परंतु किसी के बाण से अर्जुन का रथ पीछे नहीं हटता था। एक बार कर्ण के बाण से अर्जुन का रथ कुछ थोड़ा सा पीछे हट गया, इस पर युद्ध भूमि में ही भगवान श्रीकृष्ण ने कर्ण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अर्जुन ने पूछा—'भगवान! मेरे बाण से कर्ण का रथ बहुत पीछे हट जाता है और उसके बाण से मेरा रथ बहुत थोड़ा सा पीछे हटा है, फिर उनकी प्रसंसा करने की भी क्या बात है?' भगवान ने कहा—'अर्जुन। तुम्हारे रथ पर हनुमान बैठे हुए हैं। नहीं तो अब तक तुम्हारा रथ भस्म हो गया होता। उनके बैठे रहने पर भी रथ का पीछे हट जाना कर्ण की बहुत बड़ी वीरता

का सूचक है ? अर्जुन का समाधान हो गया ! महायुद्ध के अन्त में जब हनुमान अर्जुन के रथ पर से कूद पड़े तब उनका रथ जलकर भस्म हो गया। हनुमान का ही प्रताप था कि अर्जुन इतनी वीरता के साथ लड़ सके।

+ + +

श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न दिग्विजय के लिए निकले हुए थे। द्वारिका में अश्वमेघ यज्ञ होने वाला था और उसी की यह भूमिका थी। वे दिग्विजय करते हुए हिरण्मय खण्ड में पहुंचे। उस समय उनके साथ अर्जुन भी थे। और उनके रथ की ध्वजा पर हनुमान विराजमान थे। हिरण्मय खण्ड में नल-नील के वंशजों से प्रद्युम्न का बड़ा युद्ध हुआ। अर्जुन भी लड़ रहे थे। वहां के वीर बानर अर्जुन और प्रद्युम्न के रथ को अपनी पूंछ में लपेटकर जमीन पर पटक देते। बड़ा भयंकर संग्राम हुआ, अन्त में हनुमान जी ध्वजा पर से कूद पड़े और अपनी पूंछ में सब वानरों को समेट लिया। जब उन्हें मालूम हुआ कि ये तो हनुमान हैं, तब वहाँ के सब निवासियों ने बड़ी श्रद्धा-भक्ति-से हनुमान, प्रद्युम्न और अर्जुन की पूजा की। अनेकों प्रकार के पदार्थ भेंट दिये। वहाँ से फिर उन लोगों ने दूसरी ओर प्रस्थान किया।

## अमर भक्त हनुमान

हनुमान कितने बड़े तत्ववेत्ता थे; इसका पता राम रहस्योपनिषद् से चलता है। सनक, सनन्दन, सनत्कुमार तथा सनातन चारों भाई उनसे राम मन्त्रों का रहस्य प्राप्त करते हैं। बड़े-२ ऋषि और प्रहलाद उनके शिष्य हैं। स्वयं भगवान राम ने उन्हें उपनिषदों का तत्व बतलाया है, जिनका वर्णन मुक्तिकोपनिषद् में आया है। और भी पुराणान्तरों में मारुति-चरित्र विस्तारपूर्वक वर्णित हुआ है। यहां तो उनके जीवन की कुछ ही घटनाएं संक्षेप में लिखी जा सकी हैं।

भगवान मारुति कहीं गये नहीं हैं यहीं हैं, आज भी हमारे बीच में ही हैं। केवल हम उनको पहचानते नहीं। इसका कारण हमारी अश्रद्धा और अभक्ति ही है। तुलसीदास आदि महात्माओं ने इस युग में मारुति से साक्षात्कार किये हैं। अब भी ऐसे साधक हैं, जो भगवान मारुति को प्राप्त करते हैं। शास्त्रों में उन्हें पाने के अनेकों मन्त्र और अनुष्ठान भी हैं। श्रद्धापूर्वक उनका अनुष्ठान करने से मारुतिराय के दर्शन हो सकते हैं। उनके स्मरण से अन्तःकरण शुद्ध होता है और उनकी कृपा से भगवत्प्राप्ति होती है।

———

# कुछ अन्य प्रकाशन